

हिंदी विभाग

शृंगार है हिंदी

खुसरो के हृदय का उद्गार है हिंदी ।
कबीर के दोहों का संसार है हिंदी ॥
मीरा के मन की पीर बन गूँजती घर-घर ।
सूर के सागर-सा विस्तार है हिंदी ॥
जन-जन के मानस में बस गई गहरे तक ।
तुलसी के मानस का विस्तार है हिंदी ॥
रहीम का जीवन-अनुभव बोलता इसमें ।
रसखान के सुरस की रसधार है हिंदी ॥
दादू और रैदास ने गाया है झूमकर ।
छू गई है मन सभी तार है हिंदी ॥
गांधी की वाणी बनी भारत जगा दिया ।
सुराज के गीतों की ललकार है हिंदी ॥
'कामायणी,' 'उर्वशी' का रूप है इसमें ।
'आँसू' की करुण सहज जलधार है हिंदी ॥
पीडित की पीर घुल यह 'गोदान' बन गई ।
भारत का है गौरव, शृंगार है हिंदी ॥
'मधुशाला' की मधुरता इसमें घुली हुई ।
दिनकर के 'द्वापर' की हुंकार है हिंदी ॥
भारत को समझना तो जानिए इसको ।
दुनिया भर में पा रही विस्तार है हिंदी ॥
सब दिलों को जोड़ने का काम कर रही ।
देश का स्वाभिमान, आधार है हिंदी ॥

-रामेश्वर दयाल कांबोज 'हिमांशु'



अनुक्रमणिका

प्रदूषण की समस्या (गद्य)	सिद्धी गिरीष कुलकर्णी	४५
ग्रामीण जीवन- (गद्य)	संकेत बाळकृष्ण किणेकर	४९
कभी (पद्य)	सानिका रमेश पाटील	५२
दुनिया के सात अजूबे (गद्य)	प्रथमेश उदय कुंभार	५३
ये संसार (पद्य)	संकेत बाळकृष्ण किणेकर	५५
डर क्या होता है ? (गद्य)	साक्षी सागर मोरे	५६
डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन का जीवन परिचय (गद्य)	मयूरी सुजित पाटील	५८
भारतीय समाज का सहिष्णु व समावेशी स्वरूप (गद्य)	स्वप्नील सुभाष निकम	६०
कोरोना (पद्य)	विनोद पांडुरंग पाटील	६१
क्या सीख मिलती है हमें भगवान श्रीरामके जीवनसे ? (गद्य)	सानिका रमेश पाटील	६२
नारी तु शक्ति स्वरूपा... (गद्य)	दिपा कारवा	६४
हौसला हो बुलंद (पद्य)	अक्षता अ. पाटील	६४
दिल्ली की यात्रा - यात्रावर्णन (गद्य)	सृष्टी एस. पाटील	६५
सपनों का सौदागर (गद्य)	ओमकार रामा चौगले	६६
इंतजार (पद्य)	विनोद पांडुरंग पाटील	६६
स्टीफन हॉकिंग की जीवनी (गद्य)	रियाज मुल्ला	६७
मुलाखत अक्षयकुमार & PM (गद्य)	रियाज मुल्ला	६९
अरुणिमा सिन्हा :		
बहादुरी की मिसाल (गद्य)	समृद्धी पाटील	७०
MBA- चाय वाला ... (गद्य)	समृद्धी पाटील	७१
कुछ पाना बाकी है (पद्य)	दिक्षा अरुण कांबळे	७२
कोई अपना (पद्य)	मंथन बाबासो चव्हाण	७२
वीर सेनाओं कि कहानी (गद्य)	वैष्णवी अरविंद माने	७३
पिताजी (गद्य)	पंकज दिपक आरगे	७४
मुश्किल (पद्य)	मयूरी सुजित पाटील	७५
चोट (पद्य)	प्रथमेश उदय कुंभार	७५
अंधविश्वास (गद्य)	दिव्या अरुण सुतार	७६
कोशिश (पद्य)	पंकज दिपक आरगे	७८
पापा की परी हूं मैं (गद्य)	कौशिका मंगेश सुतार	७९

प्रदूषण की समस्या

सिद्धी गिरीष कुलकर्णी – द्वितीय वर्ष, स्वयंचलन व यंत्रमानव अभियांत्रिकी (माहितीपर लेखन)

न पिने का जल बचा
न बची शुद्ध हवा
धरा पर भी अनाज ना उपजे
सभी जगह हाहाकार मचे
चारो तरफ हैं शोर ही शोर
न शुद्ध होती आज की भौर
प्रदूषण हैं हर कण कण में
बीमारी हैं हर जन जन में
नदी तालाब बन गये हैं कूड़ादान
विनाश का रास्ता हैं रसायन विज्ञान
सदाबहार से सजा जंगल विलुप्त हुआ
हर जगह लंबी-लंबी चिमनी का धुआँ
कैसे सजे ऐसे में सुन्दर जीवन
जहाँ हैं प्रदूषण हर कण कण

भारत देश बहुत ही विशाल जनसंख्या वाला देश है । जनसंख्या की विशालता को देखते हुए, यदि एक अनुमान लगाया जाये, तो पता चलेगा कि यहा आज भी देश मे गरीबी, अनपढ़ता, भुखमरी फैली हुई है । जिसके चलते प्रदूषण की समस्या भी बढ़ रही है । भारत मे बढ़ते प्रदूषण का एक बहुत बड़ा कारण अशिक्षित या अनपढ़ता है । जिसके चलते बीमारियाँ या ऐसे रोग फैले है जो की लाइलाज या मृत्यु का कारण तक बने है ।

यह भारत की ऐसी बड़ी समस्या है, जिसका समय रहते निराकरण नहीं किया गया तो, हरतरह से हमें हानी ही उठानी पड़ेगी । हम आगे इसे विस्तार से देखेंगे -

प्रदूषण क्या है?

प्रदूषण का इतिहास

प्रदूषण के प्रकार

भारत देश मे प्रदूषण की स्थिति

प्रदूषण बचाव के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण बिन्दु

प्रदूषण के सम्बन्ध मे समितियां और कानून

प्रदूषण क्या है?

वैसे तो हम बचपन से किताबो में पढ़ते और सुनते आ रहे है । हमारे आस-पास के वातावरण को दूषित या खराब करना प्रदूषण है । प्रदूषण शब्द इतना प्रचलित शब्द हो चूका है, जिसे हर दिन मे, हर एक व्यक्ति जाने-अनजाने में एक न एक बार जरूर करता है । दैनिक कार्यों से लेकर तो बड़े से बड़े कार्यों मे तक हमने अपने वातावरण को बहुत दूषित कर लिया है । जिस पर ध्यान देना बहुत ही आवश्यक हो चूका है । बढ़ते प्रदूषण को अगर नहीं रोका गया तो हम अपने वर्तमान के साथ भविष्य को भी अंधकार में डूबो रहे है ।

प्रदूषण का इतिहास

प्रदूषण शब्द आज से नहीं, प्राचीन समय से चला आ रहा है ।

जब व्यक्ति खानाबदोश हुआ करता था, अपने खाने की खोज में जगह-जगह भटकता था । फिर धीरे से उसने अग्नि का अविष्कार कर खाना बनाना प्रारंभ किया । जिसके साथ ही उसने वातावरण को दूषित करना आरम्भ कर दिया । शुरू में मनुष्य का दिमाग इतना विकसित नहीं हुआ करता था । जिसके बावजूद भी उसने अनजाने में ऐसे कार्य किये जिसे प्रदूषण

आरम्भ हुआ, जैसे-

जंगलों की लकड़ी काटना
अग्नि का उपयोग
पशुओं को मार कर खाना
नदी व अन्य जलस्रोतों का गलत तरीके से उपयोग
बिना सोंचे चीजों का उपयोग और गंदगी फैलाना

अर्थात् जब मानव का दिमाग पूर्णतः विकसित नहीं हुआ था, तब से प्रदूषण भारत में चला आ रहा है। परन्तु बदले समय के साथ जैसे-जैसे मनुष्य के दिमाग का विकास हुआ, वैसे-वैसे वस्तुओं का उपयोग बदलता चला गया। विलासिता का जीवन जीने के लिये, मनुष्य ने प्राकृतिक वस्तुओं का बहुत ही शीघ्रता सेहन न करना प्रारंभ किया। जैसे-

कल-कारखानों के उपयोग के लिए लकड़ियों का ऐसा प्रयोग करना, जिसके चलते पूरे-पूरे वनों और जंगलों को तक नष्ट कर दिया।

प्राकृतिक वस्तुएँ जैसे - कोयला, खनिज पदार्थ, तेल की खदानों का बिना सोंचे समझे शीघ्रता से दुरुपयोग करना। जिसके की निर्माण में सालों लग जाते हैं।

नदियों, तालाबों अब तो सागर के जल को भी बहुत दूषित कर दिया है।

यह तो सिर्फ वह तथ्य थे, जिन्हें हम बचपन से पढ़ते-सुनते हुए आये हैं। परन्तु बदलाव आज तक नहीं हुए, जिसके चलते कई लोगों की मृत्यु और कई लाइलाज रोग के शिकार हुये।

प्रदूषण के प्रकार

बहुत ही पुराना और प्रचलित सा जवाब जिसे स्कूल के समय से पढ़ते आये हैं। जल, थल व वायु प्रदूषण। परन्तु बदले समय के साथ इन्होंने भी अपना रूप बदल लिया है। इस के साथ प्रदूषण के प्रकारों में भी वृद्धि हुई है।

१. जल प्रदूषण
२. थल प्रदूषण

३. वायु प्रदूषण

४. ध्वनि प्रदूषण

जलप्रदूषण - बहुत ही प्रचलित लाइन है - जल ही जीवन है। पर इस जल का सदुपयोग आज तक किसी ने किया है, यह बहुत बड़ा सवाल है। हम आगे जल प्रदूषण के प्रमुख कारण और समाधान देखेंगे -

जल प्रदूषण के प्रमुख कारण

१. गाँव, कस्बों का नगरो व महा-नगरो में रुपान्तरण
२. कारखानों के द्वारा
३. अनुचित रूप से कृषि कर अपशिष्ट प्रवाह करना
४. धार्मिक और सामाजिक रूप से दुरुपयोग
५. गाँव, कस्बों का नगरो व महा-नगरो में रुपान्तरण

शहरीकरण के विकास के चलते गांवों, कस्बों को नगरो व महा-नगरो में शामिल करने की इस दौड़ में जल के संबंध में और उसके सदुपयोग को ही व्यक्ति भूल गया है। शहरी इलाकों में पानी का ८० प्रतिशत दुरुपयोग होकर अपशिष्ट नदी, नालियों और तालाबों और कुओं में मिल रहा है, जो कि कभी साफ़ नहीं किये जाते और पुनः उपयोग में लाये जाते हैं, और बीमारी का कारण बनते हैं। इसी के साथ जलीय जीव-जन्तु का भी खात्मा होता है।

आज के समय में गंगा, नर्मदा, यमुना व और भी छोटी-छोटी नदी इस का सबसे बड़ा उदहारण है।

कारखानों के द्वारा

आधुनिकरण के इस दौर में कारखानों का तीव्रता से विकास हो रहा है। एक निजी घरेलू लघु उद्योग से बड़े से बड़े कारखानों/फैक्ट्री/इण्डस्ट्रीज अपने कूड़े-कचरे, अपशिष्ट पदार्थों का प्रवाह जल में कर उसे दूषित कर रहे हैं।

इसी कूड़े-कचरे को रिसाइकिल कर, उपयोग में लाया जा सकता है।

अनुचित रूप से कृषि कर अपशिष्ट प्रवाह करना

भारत एक कृषिप्रधान देश है। जिस कृषि के लिए बहुत बड़ी मात्रा में जल की आवश्यकता होती है। पर उससे भी अधिक आवश्यक बात यह है कि, उस जल का सही और उचित उपयोग किया जाये। अधिक बारिश होने पर जल का संग्रह इस तरह से करे कि, यदि भविष्य में सूखे की स्थिति उत्पन्न भी हो तो, उस जल का सही और सदुपयोग हो सके।

धार्मिक और सामाजिक रूप से दुरुपयोग

भारत में आज भी प्राचीन रीति-रिवाजों का बहुत महत्व है। जिनमें आज भी परिवर्तन नहीं हुए हैं। शव का अंतिम संस्कार, तर्पण, स्नान, अनुष्ठान आदि के चलते नदियों में प्रदूषण बढ़ते जा रहा है। इसका सबसे बड़ा उद्वहरण कुम्भ स्नान है।

थल प्रदूषण - जिस धरती पर मनुष्य रहता है, उसका महत्व नहीं समझता। कहीं भी, कौसी भी गंदगी करना जैसे - कहीं भी कचरा कर देना, थूकना, पेड़ों की कटाई करना, आधुनिक साधनों का अधिक से अधिक उपयोग करना। बिना किसी योजना के कार्य करना, जिससे प्रदूषण बढ़ता है।

थल प्रदूषण के प्रमुख कारण

१. वनों की कटाई और मिट्टी का कटाव
२. प्लास्टिक के पदार्थों का उपयोग
३. खनीज पदार्थों का अत्यधिक उपयोग
४. बिजली का अधिक मात्रा में उपयोग

वायु प्रदूषण - मनुष्य जीवन जीने के लिए ऑक्सीजन की आवश्यकता होती है। ठीक उसी तरह जो ऑक्सीजन का माध्यम है, वायु। इसी वायु को मनुष्य ने आधुनिकीकरण के चलते बहुत दूषित कर दिया है। जिसके चलते वायु प्रदूषण इतना बढ़ गया कि वो ही वायु सास की खतरनाक बीमारी में बदल गई है।

१. वायु प्रदूषण के मुख्य कारण
२. वाहनों का तेजी से उपयोग

३. रोजमर्रा की जिंदगी की होने वाले प्रदूषण
४. कारखानों के धुएँ से प्रदूषण

ध्वनि प्रदूषण - सामान्य जीवन में जीने के लिए, बोलना व सुनना बहुत ही आवश्यक है। परन्तु सामान्य आवाज से ऐसी आवाज या तरंगें जिसे सुनना मुश्किल हो जाये ध्वनि प्रदूषण कहलायेगा।

ध्वनि प्रदूषण के मुख्य कारण

१. स्पीकर के उपयोग से
 २. आधुनिक साधनों के उपयोग से
 ३. परिवहन के साधनों के उपयोग से
- यह चार मुख्य और बड़े प्रदूषण हैं, इसके अलावा अन्य प्रदूषण -

- रासायनिक प्रदूषण
- प्रकाश प्रदूषण

भारत देश में प्रदूषण की स्थिति

नंबर शहर

१ दिल्ली, भारत का दिल्ली और राजधानी जिसका प्रदूषण में पहला स्थान आता है। जिसका मुख्य कारण आबादी माना जाता है।

२ पटना, बिहार की राजधानी जो कि, प्रदूषण के मामले में देश में दूसरे नंबर पर आती है। जहाँ प्रदूषण का मुख्य कारण जनसंख्यावृद्धि, भुखमरी, अनपढ़ता है।

३ ग्वालियर, मध्यप्रदेश की एक बड़ा नगर जो भारत में प्रदूषण के मामले में तीसरे स्थान पर आता है। प्रदूषण के चलते एक पर्यटक एतिहासिक धरोहर दूषित हो रही है।

४ रायपुर, छत्तीसगढ़ की राजधानी कहा जाने वाला वह शहर जिसका प्रदूषण में चौथा स्थान आता है। यहाँ प्रदूषण का सबसे बड़ा कारण बिजली के कारखाने, कोयले का उपयोग है।

५ अहमदाबाद, गुजरात का वह शहर जहाँ कपड़ों के

कारखाने है। जिसके चलते हो रहे प्रदुषण के कारण, इसका भारत के पाचवे नंबर पर स्थान है।

६ फिरोजाबाद, उत्तर प्रदेश का वह शहर है, जो चूड़ी बनाने और कांच के कारखानों के लिए प्रसिद्ध है। जिसके कारण भारी मात्रा में प्रदुषण फैल रहा है।

७ अमृतसर, पंजाब का वह शहर जो की स्वर्ण मंदिर के कारण बहुत चर्चित है। जो की पर्यटक के स्थल के साथ खाने-पीने, यातायात के लिये भी प्रसिद्ध है। जिसके कारण यह प्रदुषण में भारत में सातवे स्थान पर है।

८ कानपूर, उत्तर प्रदेश का वह शहर जो कि, जनसंख्यावृद्धि के चलते बहुत प्रदूषित हो चूका है।

९ आगरा, उत्तर प्रदेश का वह शहर जो ताजमहल के लिए विश्व में प्रसिद्ध है। लेकिन खनन और सुखी रेत के कारण बहुत प्रदूषित हो रहा है।

१० लुधियाना, सर्वे के अनुसार भारत का दसवां प्रदूषित शहर है। जो कि बढ़ते आधुनिकीकरण व उद्योगधंधों के कारण ही दूषित हो रहा है।

प्रदूषण की समस्या और समाधान

प्रदुषण अपने आप में इतनी बड़ी समस्या है जिसको, आसानी से खत्म तो नहीं किया जा सकता। परन्तु सोच को बदलते हुए, छोटे-छोटे उपाय कर, इस समस्या को जड़से खत्म भी किया जा सकता है। और जिससे भारत को फिर से, स्वच्छ और सुरक्षित कर सकते हैं। जो स्वच्छ भारत का सपना हमारे वर्तमान प्रधानमंत्री जी ने देखा है। इसे बचाने के महत्वपूर्ण बिन्दु -

आधुनिकीकरण में हर एक तकनीक का इतना अधिक से अधिक उपयोग हो रहा है, जिसके चलते ग्लोबल वार्मिंग का खतरा बहुत बढ़ गया है। जैसे - मोबाइल, कंप्यूटर, आधुनिक मशीनों कम से कम करें। जिससे का उपयोग निकलने वाली तरंगों को रोक कर ग्लोबलवार्मिंग के खतरे को कम किया जा सकता है।

वाहनों का कम से कम उपयोग करना चाहिए। जिससे खनीज पदार्थों की खपत को रोका जा सके।

मशीनों का उपयोग कम कर, हाथ से बनी वस्तु का उपयोग अधिक करें।

सौर ऊर्जा से चलने वाले यंत्रों का उपयोग करें।

कृषि के लिए जैविक खाद का उपयोग करें।

बढ़ रहे प्लास्टिक के उपयोग को रोके और कचरे के रूप में फेंके जाने वाले प्लास्टिक को रिसाइकिल कर उपयोग करें।

अधिक से अधिक पेड़-पौधों लगाए, जल का संग्रह कर उसका सदुपयोग करें।

देश से अंधविश्वास और अनपढ़ता को खत्म कर, नदियों में मृत शरीर और अस्थियों का प्रवाह न करें।

प्रदुषण के सम्बन्ध में समितियां और कानून

प्रदुषण जैसे विशाल समस्या की गंभीरता को देखते हुए कई कानून बनाये गये। जैसे-

भारतीय संविधान के ४२ वे संशोधन के बाद Artical 48a के अनुसार - पर्यावरण का संरक्षण तथा संवर्धन, वन्य व वन्यजीवों की रक्षा राज्य करेगा। इसके आलावा Artical 51a में भी इसका उल्लेख किया गया है।

केंद्रीय प्रदुषण नियन्त्रण बोर्ड (Central Pollution Control Board), (CPCB) इस समिति का निर्माण, १९७४ को किया गया। जिसका कार्य नदियों तालाबों में हो रही गंदगी, वायु प्रदुषण, थल प्रदुषण, ध्वनि, रासायनिक, रेडियोधर्मी प्रदुषण को रोकना और देश को साफ-स्वच्छ रखना है।

प्रदुषण निवारण नियन्त्रण अधिनियम, १९७४ मुख्य रूप से तथा इसके अलावा कई छोटे-छोटे अधिनियम बने। जैसे - वायु प्रदुषण अधिनियम, जल प्रदुषण अधिनियम, ध्वनि प्रदुषण अधिनियम।



ग्रामीण जीवन

संकेत बाळकृष्ण किणेकर - तृतीय वर्ष, यांत्रिकी अभियांत्रिकी

(समीक्षा)

अगर हम ग्रामीण जीवन की बात करे, तो सबसे पहला प्रश्न यह उठता है कि आखिर गाँव है क्या ? तो जवाबमें, मैं आपको बताना चाहूँगी कि जब कुछ लोगों का एक समुह एकनिश्चित छोटेस्थान या बस्तिमें रहता है, उसे गाँव कहते हैं। गाँव के लोग अपने जीवन यापन के लिए कृषिया अन्य पारंपरिक उद्योगोपर निर्भर करते हैं। और यहाँ इन गाँवोंमें शहरोंकी अपेक्षा कम सुविधाये और संसाधन उपलब्ध होते हैं।

पहले के समयमें जब सुख सुविधाएँ एवं संसाधन नहीं हुआ करते थे. तो सारे लोग बिना छोटीसी बस्ती या स्थानपर रहा करते थे. उसे गाँव कहा जाता है. धीरे धीरे जब दुनियामें लोगोंने एक के बाद एक अनुसंधान करते हुए विकास सुविधाओं को उत्पन्न किया और उसका लगातार विकास किया तो फिर शहरकी उत्पत्ति हुई. किन्तु आज भी कुछ जगह ऐसी है जहाँपर यह सुविधाएँ नहीं पहुंच पाई है. इसलिए आज भी दुनिया है कई गांव मौजूद है. गाँव में रहनेवाले लोगोंका जीवन बहुतही साधारण होता है. उनका पूरा जीवन कृषि या उससे संबंधित उद्योगोंपर निर्भर करता है.

कहा जाता है कि भारत गाँवोका देश है, और सही भी यही है क्यूकी यहाँ की अधिक्तर जनसंख्या गाँवोंमें वास करती है। भारतवासी अपने विकास के लिए भारतीय कृषिपर ही निर्भर करते हैं। सादा जीवन उच्चविचार यही भारतीय ग्रामों की पहचान है।जब भी मनमें भारतीय ग्राम का विचार आता है, तो खेतोंमें दूर-दूर तक लहलहाती हुई हरी फसले, कड़ीधूप और खुले आसमान के नीचे काम करता किसान, घरों की बागदौड़ संभालती घर की स्त्रियोंकी छवि आखोंके सामने आ जाती है। पेड़ोंकी ताजी हवा, ताजा और शुद्ध दूध, रसायनोसे मुक्त ताजी-ताजी सब्जियाँ, गाँवोके चौपालों की रौनक आदि चिजे आज भी भारतवासियों को गाँव की ओर खींच ले जाती है। सभी ग्रामवासियों का एकदूसरे के लिए लगाव, उनका एक दूसरे

की मदद के लिए सदैव तत्पर रहना गावों की विशेषता है।

ग्रामीण जीवनकी विशेषताएँ

कृषिपर आधारित

भारतीय ग्रामीण जीवन कृषिपर आधारित है, कृषिही लोगोंका प्रमुख व्यवसाय है। गाँव में मौजूद जो लोग कुछ अन्य व्यवसाय भी करते हैं, तो उनका व्यवसाय प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूपसे कृषिपर भी निर्भर करता है।

संयुक्त परिवार

जहाँ शहरोंमें संयुक्त परिवार विरले ही दिखाई पढ़ते हैं, वही गाँवों में इसका महत्व आज भी कायम है।

जातिभेद

जहाँ शहरों में जाति,समाज आदिको छोड़ कर लोग आगे बढ़ चुके हैं, वही गाँवों में आज भी इन सब चीजोंको महत्व दिया जाता है। जो की बहुत गलत है।

पंचांग का उपयोग

जहाँ शहरी लोग तीज त्योहारों को भी भूल चुके हैं, वही ग्रामीण लोग आज भी भारतीय पंचांग को फॉलो करते हैं।

सादा जीवन

ब्रांड, फैशन ये सभी चिजे अब तक गाँवों की दहलीज को छू नहीं पाई है। गाँवों के लोग आज भी सादा जीवन उच्च विचार में विश्वास रखते हैं।

मंदगति से विकास

आज जहाँ शहरों में विकास की रफ्तार तेज होती जा रही है, वही गाँव के लोग मूलभूत सुविधाओके लिये भी संघर्ष करने के लिये मजबूर हैं।

गरीबी

जिस किसान की बदोलत हमें भोजन मिलता है, वह खुद ही ढंग से दो वक्तकी रोटी नहीं जुटा पाता। दुख तो तब होता है, जब किसानों द्वारा पैदा किए गए अन्न को दुसरे लोग बेचकर ज्यादा मुनाफा कमाते हैं और किसान की दयनीय स्थिति वैसी ही बनी रहती है।

अशिक्षा

गाँवोंकीइसस्थितिकाएकबहुतबड़ाकारणअशिक्षाभीहै। गाँव के लोग आज भी शिक्षा को जरूरी नहीं समझते। अगर लोग शिक्षा को जरूरी समझे भी तो उन्हें सुविधा उपलब्ध नहीं होती।

आजकल समय के साथ-साथ लोगों की धारणा बदल रही है। लोग गाँवोंसे शहरों की ओर पलायन कर रहे हैं। गाँवके लोग ग्रामीण असुविधा से तंग आकर शहरी सुविधा से आकर्षित हो रहे हैं, और शहरों में अपना निवास बनाकर सुविधा तलाश रहे हैं। ग्रामीण जीवन में कई सारी समस्याएँ हैं, जिसका सामना ग्रामवासियों को करना पड़ता है। आइये कुछ बिन्दुओंके द्वारा हम ग्रामीण जीवनकी समस्याओं को समझने का प्रयत्न करते हैं।

ग्रामीण जीवनकी समस्याएँ (Gramin jeevan ki samasya)

ग्रामीण असुविधाएँ

आजके समयमें हर इंसान सुविधा चाहता है, और यह सत्य है की गाँवों में शहरों की अपेक्षा सुविधाएँ नाममात्र की भी नहीं हैं। गाँवों में रहनेवाले लोग अपनी हर एक जरूरत चाहे वह खेती के संसाधन हो या घरों का सामान आदि के लिए शहरोंपर निर्भर करते हैं। उन्हें अपनी हर छोटी से छोटी जरूरत के लिये शहर आना पड़ता है, जिसमें उनका समय और पैसा दोनों व्यर्थ जाते हैं।

शिक्षा का अभाव

शिक्षा विकास का एक मात्र साधन है, जो की गाँवों में मौजूद नहीं है। आज भी कई गाँवोंमें स्कूल नहीं हैं और अगर स्कूल है भी तो उनमें शिक्षा का स्तर और व्यवस्था

एसही नहीं है। गाँवोंमें रहनेवाले बच्चोंको स्कूलके लिये शहरकी ओर आना पड़ता है और अगर वे गाँव के स्कूल में शिक्षा ले भी लेते हैं, तो उच्च शिक्षा के लिये शहर ही एक मात्र स्थान बचता है।

विकास की धीमी रफ्तार

जो गाँव, शहरोंके किनारे या मुख्य राजमार्गों पर बसेहैं, उनका तो विकास हो गया है, परंतु जो गाँव शहरी सीमासे दूर हैं वे अभी भी विकास की राह देख रहे हैं। कई गाँवों को तो अब तक मुख्य सड़को से जोड़ा भी नहीं गया है। नेता और राजनीतिक पार्टियाँ केवल चुनाव के समय इन गाँवोंकी ओर रुख करती हैं, और ग्रामवासियों के मन में नयी आस दे जाते हैं।

स्वास्थ्यकी सम्पूर्ण सुविधा उपलब्ध न होना

गाँवोंमें न अस्पताल है, नही कोई अन्य सुविधा। और अगर किसी गाँवमें अस्पताल है भी तो वहाँ कोई डॉक्टर अपनी सेवाएँ देना नहीं चाहते। अगर किसी जगह अस्पताल और डॉक्टर दोनों मौजूद हैं, तब भी वहाँ सम्पूर्ण संसाधन के अभाव में हर ग्रामवासी को अपनी छोटीसी परेशानी में शहरों की ओर रुख करना पड़ता है।

मौसम की मार

हम सभी जानते हैं कि भारतीय किसान पूरी तरहसे कृषिपर निर्भर करते हैं। वर्षा की बढ़ती अनियमितता और पर्यावरण प्रदूषण का सबसे गहरा असर कृषिपर ही पड़ता है। लगातार कई वर्षोंसे वर्षाका स्तर कम होता जा रहा है और इसका असर कृषि और किसानोंपर पड़ता है।

अवैधानिक तत्वोंकी मौजूदगी

आपको जानकर आश्चर्य होगा, कि गाँवोंमें आज भी जुआ सट्टा और मादक पदार्थों की बिक्री खुलेआम जारी है। यहाँ तक की गाँवों में रहनेवाले बच्चे भी इनकी ओर आकर्षित होते हैं और गलत आदतों का शिकार होते चले जाते हैं।

परिवहन के साधनोंका अभाव

गाँव के लोगों को परिवहन के लिये भी समस्याओं से जुंझना पड़ता है। बड़ी और फास्ट ट्रेनों के तो गाँवोंमें स्टाप ही नहीं होते, ना ही गाँवोंमें अच्छी सर्व सुविधा युक्त बसें जाती हैं। कुछ ग्रामवासियों को तो एक बसका इंतजार दिनभर करना होता है और इनमें सफर करते वक़्त असुविधाकी भी कमी नहीं होती।

भौतिक सुखसुविधाओं का अभाव

गाँवोंमें शहरोंकी अपेक्षा सुखसुविधा के सामान मौजूद नहीं होते। जैसे अगर ग्रामवासी खर्चाकर के फ्रीज़, कूलर आदि खरीदभी ले, तो उन्हें बिजली सही समयपर उपलब्ध नहीं होती।

मनोरंजन के साधनों का अभाव

गाँवोंमें शहरों की तरह मनोरंजन के साधन जैसे सिनेमाघर, गार्डन, चौपाटी उपलब्ध नहीं होते। गाँव में रहनेवाले बच्चोंको तो समोसे कचोड़ीया कुल्फीके लिये भी कई दिनों का इंतजार करना पड़ता है।

ऐसा नहीं है, कि ग्राम में कोई लोग नहीं रहते या वहाँ जनजीवन संभव ही नहीं है। जहाँ गाँवमें रहनेवाले लोगोंको कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है, वही ग्रामीण जीवनके कई फायदे भी है, जिसके कारण पुराने ग्रामीण लोग अपना गाँव छोड़ना नहीं चाहते।

ग्रामीण जीवन के लाभ / फायदे

शुद्ध प्रकृतिक वातावरण

शहरोंकी अपेक्षा गाँवोंका वातावरण शुद्ध है, यहाँ आज भी शहरी प्रदूषणसे मुक्त शुद्ध हवापानी उपलब्ध है। यहाँ ना वाहनोंसेनिकलनेवालाधुआहै, नाही डीजे का शोर। यहाँ के लोग कूलर पंखेके बिना ताजी हवा का आनंद लेना पसंद करते हैं और विदेशी पेय से दूर शुद्ध पेय जैसे दही, लस्सी, शिकंजी आदि को पसंद करते हैं।

शुद्ध रसायनमुक्त भोजन

गाँवके लोग खुद खेती करतेहैं, गाय भैस पालते हैं, तो वे अपने लिये बिना रसायन का उपयोग किए अनाज, सब्ज़ी आदिका प्रबंधकर सकते हैं। जहाँ हम लोग शहरोंमें पैकेटका दूध इस्तेमाल करतेहैं, वहीं गाँवोंमें लोग गाय भैसों का शुद्ध और ताजा दूध पिते हैं तथा घर पर ही दूध के अन्य पदार्थ बनाते हैं।

त्योहारों का सही आनंद

जहाँ शहरों में लोग दिनभर की दौड़ धूप से तंग आकर त्योहारों का आनंद नहीं ले पाते। वही गाँव के लोग हर त्योहार को पूरे उत्साहसे मनाते हैं। सच तो यह है कि भारतमें अब त्योहारों का अस्तित्व केवल गाँवोंमें शेष रह गया है।

एक दूसरे की मदद के लिये सदैव तत्पर

गाँवोंमें अब भी भाई चारे की भावना मौजूद है। यहाँ लोग एक-दूसरे के साथ परिवार की तरह रहते हैं, और एक-दूसरे की सहायता के लिये तत्पर रहते हैं।

शहरी भागदौड़ से दूर सुकून की ज़िंदगी

जहाँ बड़े-बड़े शहरों में लोग भाग दौड़से तंग आ चुके हैं, वही ग्रामीण जीवन अबभी सुकूनसे भरा हुआ है। यहाँ लोग दिनभर की मेंहनतके बाद शाममें जल्दी खाना खाकर अपने आंगनोंमें आराम करते हैं, अपने दिनभर की बातें एकदूसरे को बताते हैं। वही शहरी लोग इन सब बातोंसे दूरदूर तक अंजान हैं।

इन सब बिन्दुओंके पढ़कर यह निष्कर्ष निकाल पाना मुश्किल है कि गाँव का जीवन बहुत अच्छा है या बहुत बुरा। मेरा मानना तो यह है कि शिक्षा ही हर समस्या का समाधान है इसलिए अपने बच्चोंको जितना हो सके उच्चशिक्षित करे और अपने देशके विकासमें योगदान दें।

ग्रामीण जीवन में सुधार कैसे लायें

ग्रामीण जीवन इतना बुरा नहीं है जितना हम उसे समझते हैं। लेकिन यह सच है की ग्रामीण जीवनमें कुछ सुधार होने आवश्यक

है और हम यह सुधार इस तरहसे कर सकते हैं -

गाँव के लोगों को शिक्षा के प्रति आकर्षित करवाएं.
शिक्षा का महत्व बताएं.

गांवोंमें खेतीमें सुधार के लिए आधुनिक तरीके सुझाएँ.
अगर आप अच्छे पढ़े लिखे है तो अपने गाँव के विकासमें योगदान दें.

अपने गाँव की समस्याओं से जिला कलेक्टर या सरकारी अधिकारी को अवगत करवाएं.

गाँव की प्राचीन धरोहर को संभालकर रखें और उसे किसी भी तरह की क्षति ना आने दें.

ग्रामीण जीवन एवं शहरी जीवन में अंतर

यदि हम यहाँ गाँव के जीवन एवं शहरके जीवन की बात करें तो दोनोंमें काफी अंतर होता है, जो कि इस प्रकार हैं-

ग्रामीण जीवन बिना सुख सुविधाओं एवं संसाधनों के बीच व्यतीत होता है, जबकि शहरी जीवन सुखसुविधाओं एवं संसाधनोंसे भरपूर होता है.

ग्रामीण जीवनमें गरीबी अधिक होता है लोग कृषि एवं छोटे उद्योगोंपर निर्भर होते हैं जिसके कारण उनकी आमदनी भी सीमित होती है, किन्तु शहरी जीवनमें बड़ेबड़े उद्योग होते हैं जिसके कारण वहाँपर आमदनी भी ज्यादा होती है.

ग्रामीण जीवनमें भले ही सुखसुविधाएँ कम हो लेकिन यहाँपर जीवन बहुत ही खुश हाल एवं आरामदायक होताहै, जब कि शहरी जीवन में सुखसुविधाएँ होने की बावजूद भी यहाँ के लोगों की दिनचर्या आरामदायक नहीं वे हैं वे पूरे समय भागते रहते हैं.

ग्रामीण जीवनमें शिक्षा की सुविधाएँ भी कम हैं लेकिन शहरी क्षेत्र में यह सुविधाएँ बेहतर होती हैं जिसके कारण वहाँके बच्चोंको बेहतर शिक्षा मिल जाती है.

ग्रामीण क्षेत्रमें सुविधाएँ कम होनीकी वजहसे वहाँपर समस्याएं भी अधिक आती है, लेकिन शहरों में समस्याएं कम होती हैं.

उपसंहार

इस लेखमें हमने आपको गाँवमें होनेवाली समस्याओं और उससे निजात पाने के बारेमें जानकारी देनेका प्रयास किया है. अब यदि हम इसके निष्कर्ष की बात करें तो आज हमारा भारत देश बदल गया है. क्योंकि यहाँ पहलेके समयके गाँवकी अपेक्षा अबके समयके गाँवमें काफी विकास हो चूका है. और इसे लगातार विकासशील बनानेके लिए सरकार ठोस कदम उठानेपर जोर भी दे रही है.



कभी

कभी अपनी हंसी पर आता है गुस्सा।
कभी सारे जहाँ की हंसाने का दिल करता है॥

कभी छुपा लेते है गम की दिल के किसी कोने में।
कभी किसी को सब कुछ सुनाने का दिल करता है॥

कभी रोते नही लाख दुःख आने पर भी।
और कभी यूँ ही आंसू बहाने को दिल करता है॥

कभी अच्छा सा लगता है आजाद घूमना, लेकिन
कभी किसी की बाहों मे मिट जाने को दिल करता है॥

कभी कभी सोचते है नया हो कुछ जिंदगी में।
और कभी बस ऐसे ही जिये जाने को दिल करता है॥

सानिका रमेश पाटील - द्वितीय वर्ष, विद्युत अभियांत्रिकी

दुनिया के सात अजूबे

प्रथमेश उदय कुंभार - द्वितीय वर्ष, विद्युत अभियांत्रिकी

(माहितीपर लेखन)

दुनिया के सात अजूबे सबसे पहले लगभग 200 साल पहले आये थे। प्राचीन विश्वमें सबसे पहले 7 अजूबे का विचार हेरोडोटस और कल्लिम चुसको आया था।

उस समय के सात अजूबे थे

(7 Wonders of the Old World) -

1. ग्रेट पिरामिड ऑफ़ गिज़ा
2. हैंगिंग गार्डन ऑफ़ बेबी लोन
3. स्टेचू ऑफ़ जीउस अट ओलम्पिया
4. टेम्पल ऑफ़ आर्टेमिस
5. माउसोलसका मकबरा
6. कोलोसुस ऑफ़ रोडेज
7. लाइटहाउस ऑफ़ अलेक्सान्दिरा

इन सात अजूबोंमें सिर्फ़ अभी ग्रेट पिरामिड ऑफ़ गिज़ाबचा हुआ है और इसे अब एक 7 अजूबों से अलग एक विशेष स्थान दिया गया है. बाकि सभी अब नष्ट हो चुके हैं. इसके बाद कई देश के इंजिनियर और शोधकर्ताओंने अपने अपने हिसाब कई लिस्ट निकाली, लेकिन उसे पुरे विश्वसे सहमति नहीं मिली.

दुनिया के नए सात अजूबे

21 वी सदी शुरू होने से पहले 1999 में सात अजूबेको नए तरीके से सबके सामने लाने की बात शुरू हुई. 21 वी सदीके भारतके बारेमें यहाँ पढ़ें. इसके लिए स्विट्ज़रलैंड के ज्यूरिकमें न्यू 7 वंडर फाउंडेशन बनाया गया. इन्होंने कैनेडामें एक साईट बनवाई, जिसमें विश्वभर की 200 कलाकृतिके बारेमें जानकारी

थी, और एक पोल शुरू हुआ, जिसमें इन 200 एंट्रीमेंसे 7 एंट्री को चुनना था.

न्यू 7 वंडर फाउंडेशनके अनुसार इस परियोजनामें लगभग 100 मिलियन लोगोंने नेट एवं फोन के द्वारा अपना वोट दिया. इन्टरनेट के द्वारा एक इन्सान एक ही बार 7 अजूबे चुनकर वोट कर सकता था, लेकिन फ़ोनके द्वारा एक इन्सान कई वोट दे सकता था. वोटिंग 2007 तक चली थी, जिसका रिजल्ट 7 जुलाई 2007 कोलिस्बनमें सबसे सामने आया.

अजूबा का नाम	निर्माण	जगह
चीनकी दीवार	सातवी BC शताब्दीमें	चीन
पेट्रा	100 BC	जोर्डन
ताजमहल	1648	भारत
क्राइस्ट रिडीमर	1931	ब्राजील
माचू पिच्चु	AD 1450	पेरू
कोलोसम	AD 80	इटली
चिचेन इत्ज़ा	AD 600	मैक्सिको

1 **चिचेन इत्ज़ा (Chichen Itza)** - चिचेनइत्ज़ा मैक्सिको में बसा बहुत पुराना मयान मंदिर है. इसका निर्माण -AD 600 में हुआ था. चिचेनइत्ज़ा मायाका सबसे बड़ा शहर है, यहाँकी जनसँख्या भी अधिक है. मैक्सिकोमें चिचेनइत्ज़ा में सबसे पुराना पुरातात्विक स्थलोंमें से एक है, जहाँ हर साल 104 मिलियन पर्यटक घुमने आते हैं. चिचेन मैक्सिको में युक्रान्तन स्टेटमें स्थित है.

चिचेनइत्ज़ा का मायामंदिर ५ किलोमीटरमें फैला हुआ है. यह ७९ फीट ऊँचा है. जो पत्थरों से पिरामिड की आकृतिका बना है.

इस मंदिर में उपर जानेके लिए चारों दिशाओं से सीढियां बनी है, टोटल 365 सीढियां है. हर दिशा से 91 सीढियां है. कहतेहै, हर एक सीढी एकदिन का प्रतिक है. उपर 365 दिन के लिए एक बड़ा चबूतरा बना हुआहै. इसके अलावा इस जगह पर पिरामिड ऑफ़ कुकुल्कन, चकमूल का मंदिर, हजार स्तंभों के हॉल एवं कैदियों के खेल का मैदान है. यह सबसे बड़े मयान मंदिरोंमें से एक है.

2. क्राइस्ट दी रिडीमर (Christ The Redeemer) - यह ब्राजील के रियो डी जनेरिओ में स्थित है. दुनिया एकलौते जीवते परमेश्वर येशु मसीह की 38 मीटर, लगभग 130 फीट ऊँची और 28 मीटर चौड़ी यह प्रतिमा, दुनिया के अजूबों में से एक है. इससे ऊँची कोई भी प्रतिमा आजतक नहीं बनी है. दुनिया के उद्धारक तर्क रूपमें माने जानेवाले येशु मसीह की इस मूर्तीका निर्माण 1922 में शुरू हुआ था, जो 12 अक्टूबर 1931 को इस जगह पर स्थापित किया गया था. यह मूर्ती क्रांकीट और पत्थर से बनी है, जिसे ब्राजीलसे सिल्वा कोस्टाने डिजाइन किया था, एवं फ्रेंच के महान मूर्तिकार लेन दो व्सकी से इसे बना के तैयार किया था. इसका वजन 635 टनके लगभग होगा. यह रियो शहरके 700 मीटर ऊँची कोरको वाडोकी पहाड़ीपर स्थित है. दुनियाभर में ईसाई धर्म का यह बहुत बड़ा प्रतीक है.

३. चीन की दीवार (The Great Wall of China) - चीन की इस विशाल दीवार को दुनिया में सब जानते है. यह दीवार कई हिस्सों में वहां के शासकों द्वारा अपने राज्य की रक्षा के लिए बनाई गई थी, जिसे धीरे धीरे जोड़ दिया गया, जो अब एक किलेनुमा आकृति की हो गई है. इसका निर्माण सातवीं शताब्दी से १६ वीं शताब्दी तक हुआ था. यह महान कलाकृति इतनी मजबूत, और विशाल है कि इसे ग्रेट वाल ऑफ़ चाइना कहा गया. इस चीन की दीवार की विशालता को वैज्ञानिक ने अंतरिक्ष से भी देखा है, इस मानव निर्मित कलाकृति वहां से भी दिखाई पड़ती है. इसका निर्माण मिट्टी, पत्थर, ईंट, लकड़ी और दुसरे मटेरियल को मिलाकर हुआ है. यह विशाल दीवार पूर्वके दंदोंग से शुरू होकर पश्चिम में लोप लेक तक फैली है. चीन की

दीवार लगभग ६४०० किलोमीटर तक फैली है, और यह ३५ फीट ऊँची है. यह दीवार किले के समान बनी है, इसकी चौड़ाई इतनी है कि इसमें १०-१५ लोग आराम से चल सकते है.

४. पेद्रा (History of Petra) - साउथ जॉर्डन में बसे पेद्रा शहर की कलाकृति सात अजूबों में शामिल है. यह एक एतेहासिक और पुरातात्विक शहर है. इस शहर में चट्टानों को काटकर वास्तुकला का निर्माण हुआ है, साथ ही यहाँ पानी की नालीनुमा प्रणाली है, यही वजह है ये शहर बहुत फेमस है. इस शहर को रोस सिटी भी कहा जाता है, क्योंकि यहाँ को पत्थर काटकर कलाकृति बनी है, वो सब लाल रंग की है. इसका निर्माण ३१२ BC केलगभग हुआ था. यह जॉर्डन का मुख्य आकर्षण है, जहाँ हर साल बहुत से पर्यटक जाते है. यहाँ ऊँचे ऊँचे मंदिर है, जो आकर्षण का केंद्र है. इसके अलावा तालाब, नहरें भी है, जो बहुत सुन्योजित तरीके से बनाई गई है. इसको देखने के लिए भी लोग बहुत यहाँ आते है.

५. ताजमहल (Taj Mahal history) - भारत की शान ताजमहल भी दुनिया के सात अजूबों में से एक है. अपनी खूबसूरत कलाकारी, आकृति की वजह से इसे अजूबा बोला गया था. ताजमहल का निर्माण १६३२ में शाहजहाँ द्वारा करवाया गया था, यह एक प्यार की निशानी है, जिसे शाहजहाँ ने अपनी पत्नी मुमताज की याद बनवाया था. सफ़ेद संगमरवर का बना ये मकबरा, पूरी तरह से सफ़ेद है, जिसके चारों ओर बगीचा है, एवं सामने पानी की बारी है. ताजमहल भारत के आगरा शहर में स्थित है. इस जैसे सुंदर कलाकृति दुनिया में और कहीं देखने को नहीं मिलेगी. मुग़ल शासक शाहजहाँ ने जब इसे बनवाया था, तब इसमें १५ साल का समय लगा था, और इसे बनाने के बाद राजा ने निर्माण से जुड़े सभी मजदूरों के हाथ कटवा दिए थे, ताकि वे ऐसा कुछ दूसरा न बना सके. भारत में मुग़लों लम्बे समय तक शासन किया था, इस दौरान उन्होंने बहुत सी शिल्पकारी, कलाकृति बनवाई थी, जो आज तक भारत में मौजूद है. ताजमहल की सुन्दरता को देखने के लिए, देश दुनिया

से लोग दूर दूर से आते हैं।

६. रोम का कोलोसियम (Roman Colosseum History) - रोम के इटली में बसाये एक विशाल स्टेडियम है। रोम में देखने के लिए ये मुख्य आकर्षण है। इसका निर्माण ७२ -D में शुरू हुआ था, जो ८० -D में पूरा हुआ था। ओवल शेप की ये विशाल आकृति, कंक्रीट और रेत से बनाई गई थी। इतनी पुरानी ये वास्तुकला आज भी दुनिया के सात अजूबों में अपनी जगह बनाये हुए है। प्राकृतिक आपदा, भूकंप से ये थोड़ा बहुत उध्वस्त हुआ, लेकिन आज भी इसकी विशालता वैसे ही है। यहाँ ५० हजार से ८० हजार लोग बैठ सकते हैं। यहाँ जानवरों की लड़ाई, खेल कूद, संस्कृतिक कार्यक्रम होते हैं। यह २४ हजार वर्ग मीटर के क्षेत्र में फैला हुआ है। इस जैसी आकृति को बनाने की कोशिश कई इंजिनियरों द्वारा की गई, लेकिन ये एक तरह की पहेली है, जिसे आज तक कोई सुलझा पाया है।

७. माचू पिचु (Machu Picchu history) - दक्षिण अमेरिका के पेरू में स्थित माचू पिचु एक ऊँची छोटी पर स्थित शहर हुआ करता था। समुद्र तल से २४३० मीटर उपर माचू पिचु में १५ वीं शताब्दी के समय इका सभ्यता रहा करती है। इतनी ऊंचाई में शहर कैसे बसा, ये सोचने वाली बात है और यही इसे दुनिया का सातवाँ अजूबा बना देता है। पुरातत्वविदों का मानना है कि माचू पिचु का निर्माण राजा पचाकुतीने १४०० के आस पास करवाया था। यहाँ उनके शासक रहा करते थे, उस समय वहाँ इका जाती रहती थी। इसके १०० साल बाद इस पर स्पेन नेविजय प्राप्त की, और इसे ऐसे ही छोड़ कर चले गए। उन्हें ये झगह से कोई ज्यादा लगाव नहीं था, जिसके बाद इसकी देखरेख करने वाला कोई नहीं था, जिससे यहाँ रहने वाली सभ्यता भी नष्ट हो गई। ये जगह भी इसी के साथ घूम हो गई, लेकिन १९११ में अमेरिका के इतिहासकार हीरम बिंघम ने इसकी खोज की, और इसे दुनिया के सामने लाया। १९८३ में यूनेस्को (UNESCO) इसे विश्व की धरोहर घोषित किया। यहाँ इका सभ्यता की कलाकृति को आज भी देखा जा सकता है, बहुत से वहाँ ऐसी चीजें अभी मौजूद हैं, जो उनके द्वारा बनाई गई थी। माचू पिचु पर्यटकों का ध्यान अपनी और

आकर्षित करता है, इसे देखने कई लोग जाते हैं।

दी ग्रेट पिरामिड ऑफ़ गिज़ा सबसे बड़ा और सबसे पुराना पिरामिड है, जो आज तक इस दुनिया में प्राचीन काल से मौजूद है। इसलिए इसे एक विशेष सम्मान के तौर पर स्थान प्राप्त है, और ७ वंडर्स के अलावा इसका नाम भी लिया जाता है।

दी ग्रेट पिरामिड ऑफ़ गिज़ा (Great Pyramid of Giza) - इजिप्ट पे स्थित गिजा का ये पिरामिड बहुत पुरानी कलाकृति है, जो प्राचीन ७ अजूबों में से एक है। इसका निर्माण २५८०-२५६० BC में हुआ था। यह २५८३२८३ क्यूबिक मीटर में फैला हुआ है। इसकी ऊंचाई १४६.५ मीटर है। ३८०० साल तक ये सबसे लम्बी मानव निर्मित कलाकृति रही है।

ये संसार

कभी लगता है इस जिन्दगी में खुशियां बुशुमार हैं,
तो कभी लगने लगता है जिन्दगी ही बेकार है।
कभी लगता है लोगो में बहुत प्यार है,
तो कभी लगता है रिश्तो में सिर्फ दरार है।
कभी लगता है हम भी जिन्दगी
जीने के लिए बेकरार हैं,
तो कभी लगता है सिर्फ हमें मौत का इंतजार है।
कभी लगता है हमको भी उनसे प्यार है,
तो कभी लगता है सिर्फ प्यार का बुखार है।
कभी लगता है शायद उनको भी हमसे इजहार है,
फिर लगता है हम दोनो में तो सिर्फ तकरार है।
कभी लगता है सब अपने ही यार हैं,
फिर लगता है इनमें भी छिपे गद्दार हैं।
कभी लगता है कितना प्यारा संसार है,
तो कभी लगता है ये संसार बस संसार है।

संकेत बाळकृष्ण किणेकर - तृतीय वर्ष, यांत्रिकी अभियांत्रिकी

डर क्या होता है ?

साक्षी सागर मोरे (प्रथम वर्ष) परमाणू व संगणक अभियांत्रिकी

(वैचारिक लेख)

डर एक प्राकृतिक, शक्तिशाली और आदिम मानवीय भावना है। इसमें एक सार्वभौमिक जैव रासायनिक प्रतिक्रिया के साथ-साथ एक उच्च व्यक्तिगत भावनात्मक प्रतिक्रिया शामिल है। डर हमें खतरे की उपस्थितियां नुकसान के खतरे के प्रति सचेत करता है, चाहे वह खतरा शारीरिक हो या मनोवैज्ञानिक।

असल में डर इंसान की सोच ही होती है। इंसान डरता तभी है जब उसके मन में बहुत सारे ऐसे विचार होते हैं जिनका उसके पास जवाब नहीं होता, अगर आपको आपके मन में जो डर है उसका जवाब हो तो आप नहीं डरोगे।

इंसान के अंदर डर बहुत तरीके से हो सकते हैं जिनकी वजह से डरता है, क्या आपने कभी सोचा है कि आपको डर क्यों लगता है? अगर आपने नहीं सोचा है तो हम आपको बताने जा रहे हैं।

जब भी हम कोई भी ऐसा काम करते हैं जो कि हमने आज से पहले कभी भी नहीं किया हो अगर हम उस काम को करते हैं तो हमारे अंदर डर आने लग जाता है।

जिस चीज़ की हमारे पास कोई भी जानकारी नहीं होती है तो हम अपने-आप ही उस काम से डरने लग जाते हैं।

जब भी हम को डर लगता है तो हमारे अंदर दो तरह की प्रतिक्रिया होती है।

१. शारीरिक प्रतिक्रिया

२. भावनात्मक प्रतिक्रिया

१. शारीरिक प्रतिक्रिया

जब हम किसी खतरे का सामना करते हैं, तो हमारे शरीर विशिष्ट तरीकों से प्रतिक्रिया करते हैं। डर की

शारीरिक प्रतिक्रियाओं में पसीना आना, हृदय गति में तेजी हो जाती है।

इस शारीरिक प्रतिक्रिया को लड़ाई या उड़ान प्रतिक्रिया के रूप में भी जाना जाता है, जिसके साथ आप का शरीर खुद को युद्ध में प्रवेश करने या भागने के लिए तैयार करता है।

यह शारीरिक प्रतिक्रिया प्रतिक्रिया संभवतः एक विकासवादी विकास है। यह एक स्वचालित प्रतिक्रिया है जो हमारे अस्तित्व के लिए महत्वपूर्ण है।

२. भावनात्मक प्रतिक्रिया

दूसरी ओर, भय के प्रति भावनात्मक प्रतिक्रिया अत्यधिक व्यक्तिगत होती है। क्योंकि डर में हमारे दिमाग में कुछ ऐसी ही रासायनिक प्रतिक्रियाएं शामिल होती हैं जो खुशी और उत्तेजना जैसी सकारात्मक भावनाएं करती हैं, कुछ परिस्थितियों में डर महसूस करना मजेदार के रूप में देखा जा सकता है, जैसे कि जब आप डरावनी फिल्में देखते हैं।

कामयाबी उन्ही लोगों के कदम चूमती है,

जो अपने फैसलों से दुनियाँ बदल कर रख देते हैं और

ना कामयाबी उन लोगों का

मुकद्दर बनकर रह जाती है

जो लोग दुनियाँ के डर से

अपने फैसले बदल दिया करते हैं।

डर के लक्षण

डर में अक्सर शारीरिक और भावनात्मक दोनों लक्षण शामिल होते हैं। प्रत्येक व्यक्ति अलग तरह से डर का अनुभव कर सकता है, लेकिन कुछ सामान्य लक्षणों में शामिल हैं:

छाती में दर्द

ठंड लगना
शुष्क मुंह
जी मिचलाना
तेज धडकन
सांस लेने में कठिनाई
पसीना आना

हमने ऊपर ये समझा कि डर क्या होता है और हम को डर क्यों लगता है और ये डर के क्या-क्या लक्षण होते हैं अब हम ये समझेंगे कि इसको खत्म कैसे किया जाये ।

डर को खत्म करने के लिए आपको समझना होगा कि डर कितने प्रकार का होता है और किस डर में हमको क्या एक्शन लेना चाहिए ।

१. शारीरिक डर

२. मनोवैज्ञानिक डर

डर से छुटकारा पाने का सबसे आसान तरीका :-

जब हम इन डर को समझ लेते हैं यह डर हमारे अंदर से गायब होने लगता है और हम खुल कर अपने काम को करने लगते हैं जैसे कि अगर हम को किसी के सामने बोलने से डर लगता है और हम बोल भी नहीं पाते हैं तो अब यह हमारा डर मनोवैज्ञानिक डर है या फिर शारीरिक डर है सबसे पहले तो हमको यह समझना होता है कि यह डर कौनसा है फिर उसके बाद अपनी समझ के आधार पर उसको समझना है अगर यदि इस डर को कम करना है तो अपने आप से एक सवाल पूछना है की मुझको डर क्यों लग रहा है तो फिर हमारा दिमाग उसका अपने आप ही जवाब ढूँढ निकालेगा और उस समय हमको ये देखना होगा की

सामने वाला हमसे क्या सवाल पूछ रहा है अब वहा पर हमको कितना ज्ञान है वो भी बहुत मायने रखता है अगर हमको knowledge है तो हम ज्यादा विश्वास से उसका जवाब दे पाएंगे ।

हमको जो एक डर सबसे ज्यादा लगता है या फिर कह लीजिये ९९ % लोगो को लगता है कि लोग क्या कहेंगे अगर

ये डर हमारे अंदर से निकल जाये तो फिर तो हमारा काम बहुत आसान हो जायेगा ।

क्योकि जब भी हमारे अंदर कोई भी काम करने का विचार आता है कुछ करने का तो एकदम से बीच में ये आ जाता है की लोग क्या कहेंगे और हम उसको करने से पहले ही छोड़ देते हैं ।

मनोवैज्ञानिक डर में कोई प्लानिंग काम नहीं आती है यहाँ पर सिर्फ और सिर्फ समझ काम आती है अब डर किस तरह से लगता है की मैं कोई काम करूँगा तो पता नहीं लोग क्या कहेंगे मेरे घर वाले क्या कहेंगे मुझे बुरा तो नहीं लगेगा ये सब मनोवैज्ञानिक डर है ।

अब शारीरिक डर क्या है मान लो आप ने बहुत मेहनत करके कुछ पैसे जोडे है अगर कोई बोल के वो मेरे को दो और मैं इसको इतने समय में दुगुना करके दूँगा तो वहाँ पर आपको डरना चाहिए या ना डरना चाहिए ये होता है शारीरिक डर ।

अब शारीरिक डर में ज्ञान, समझ और प्लानिंग काम आती है और मनोवैज्ञानिक डर में हमको

कुछ भी करने की जरूरत नहीं है बस उसको समझना है और उसके हिसाब से एक्ट करना है ।

अगर कोई भी चीज़ जिसको हमने न तो सीखा है और ना ही हमको करना आता तो हमको उससे डर लगता है पर जब हम उसको सीख जाते हैं उसके बाद नहीं लगता है जैसे मान लो हमको गाड़ी शुरुआत में चलानी नहीं आती जब तक नहीं आती है तब तक हमको डर लग रहा होता है पर जब आ जाती है तो वह सारा डर निकल जाता है ।

जब हमको इन दोनों के बीच के फर्क को समझ लेते हैं तो बड़ी ही आसानी के साथ अपने जीवन में आगे बढ़ते ही चले जाते हैं ।

उससे मत डरो जो वास्तविक नहीं है,
ना कभी था ना कभी होगा. जो वास्तविक है,
वो हमेशा था और उसे कभी नष्ट नहीं किया जा सकता है ।



डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन का जीवन परिचय

मयूरी सुजित पाटील (प्रथम वर्ष) विद्युत अभियांत्रिकी

(व्यक्तिचित्र)

शिक्षा, साक्षरता ऐसे शब्द हैं जिनका जिक्र होते ही व्यक्ति के अंतःहृदय में सकारात्मक व नकारात्मक विचारों की कशम-कश आरंभ हो जाती है। होगी भी क्यों ना, आज की आधुनिक शिक्षा को एक व्यापार रूप जो दे दिया गया है। न तो आज का

अध्यापक छात्रों के भावनात्मक अर्थात् संस्कारों का सर्वांगीण विकास समक्ष नहीं रहा। इसलिए आज की अधिकांश युवा पीढ़ी, अपने कर्तव्य निष्ठा, उत्तरदायित्व, देशप्रेम, देशभक्ति जैसे संस्कार रूपी बीज शून्य मात्र अंकुरित है। जिसके फलस्वरूप आये दिन स्कूल अथवा कॉलेजों में देश विरोधी भाषण बाजी आरंभ हो जाती है और उनके समर्थन में राजनैतिक

रोटियां बखूबीसे सेकी जाती हैं। जिसके चलते वर्तमान में सम्मान जनक अध्यापन कार्य को एक ग्रहण सा लग चुका है।

आज हम ऐसे व्यक्तित्व की जीवन गाथा पर चर्चा करने जा रहे हैं, जो बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। उन्होंने अपने जीवन में, शिक्षा व राजनैतिक क्षेत्र को अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। इसी कारण उन्हें देश के सर्वोच्च नागरिक सम्मान भारत रत्न से सम्मानित किया गया। इसके अतिरिक्त उन्हें अन्य क्षेत्रों में सराहनीय कार्यों के लिए अनेक पुरस्कार प्रदान किये गये। जिनके उच्च व्यक्तित्व से शिक्षक व छात्र प्रेरित होकर

अपने जीवन को एक आदर्श के रूप में स्थापित कर सकेंगे। लेखक ऐसे महापुरुष के बारे में बात करने जा रहा है। जो कि, स्वामी विवेकानंद व वीर सावरकर के चरित्र जीवन

से काफी प्रभावित थे। वे उनको अपना आदर्श मानते थे। जिनका जन्म दिन, एक शिक्षक दिवस के रूप में प्रतिवर्ष हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है।

डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन जी ऐसे एकमात्र महापुरुष हैं, जो धर्मसंस्कृति से काफी लगाव करने के साथ-साथ संपूर्ण विश्व को एक विद्यालय की संज्ञा देते थे। इसलिए उन्होंने हमेशा अपनी पुस्तकों व लेखों के माध्यम से संपूर्ण जनमानस को, विश्व परिधि से परिचित कराने का सराहनीय प्रयास किया। उन्होंने अपनी पुस्तकों में अंग्रेजी भाषा को महत्व दिया, जिनमें से उनकी महत्वपूर्ण पुस्तकें जैसे:- भारतीय दर्शन व धर्म, गौतमबुद्धा जीवन और दर्शन, भारत और विश्व हैं।

उनका प्रयास प्रति-पल कुछ नया करना व सीखने का रहता था। वे ऐसे व्यक्ति थे, जिन्हें ता-उम-शिक्षा क्षेत्र से स्कॉलरशिप प्राप्त होती रही। डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन जी के पूर्वज तमीलनाडू के सर्वपल्ली ग्राम के निवासी थे, जो कि एक धार्मिक स्थान के नाम से प्रचलित था, उनके पूर्वज चाहते थे, कि उनकी भावी पीढ़ियों के नाम का उच्चारण उनके पैतृक गांव के नाम से आरंभ हो, ताकि सदैव उच्चारित व्यक्ति के हृदय में पवित्रता के भाव जाग्रत हो।

डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन का जन्म तमीलनाडू के गांव तिरूतनी में एक निर्धन ब्राह्मण परिवार में, दिनांक ५ सितम्बर १८८८ को, पिताकी ६ संतानों में से दूसरी संतान के रूप में हुआ था। डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन जी के पिताजी का नाम सर्वपल्ली वीरास्वामी व माता का नाम सीताम्मा था। डॉ.

सर्वपल्ली राधाकृष्णन जी बचपन से ही तीव्र बुद्धि के परिचायक थे। डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन जी की प्रारंभिक शिक्षा सुचारु रूप से गांव में ही हुई। एक मेधावी छात्र होने के कारण उनका दाखिला क्रिश्चियन मिशनरी संस्था द्वारा संचालित लुर्थन मिशन स्कूल तिरुपति में करा दिया गया, जहां वे १८९६ से १९०० तक रहे।

सन १९०० में डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने वेल्हूर कॉलेज से शिक्षा ग्रहण कर, १९०६ में दर्शन शास्त्र में एम.ए की परीक्षा उत्तीर्ण की। उन्होंने १९०९ में मद्रास प्रेसीडेंसी कॉलेज में दर्शन शास्त्र विषय में अध्यापन कार्य आरंभ कर दिया। सन १९१६ में डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन उक्त कॉलेज में ही दर्शन शास्त्र के सहायक प्राध्यापक बन गये। १९१८ में मैसूर यूनिवर्सिटी के द्वारा उन्हें दर्शन शास्त्र का प्रोफेसर नियुक्त कर लिया गया। तत्पश्चात वे इंग्लैंड के ऑक्सफॉर्ड यूनिवर्सिटी में भारतीय दर्शन शास्त्र के शिक्षक बने।

जिस कॉलेज से उन्होंने एम.ए पास किया था, सौभाग्य से उन्हें उसी कॉलेज का उपकुलपति भी चुन लिया गया। परंतु एक वर्ष उपरांत उन्होंने उक्त सेवा छोड़, बनारस विश्वविद्यालय में उपकुलपति का पद संभाल लिया।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद जब जवाहरलाल नेहरू ने डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन से आग्रह किया, कि वे विशिष्ट राजदूत के रूप में सोवियत संघ के साथ राजनायिक कार्यों की पूर्ति हेतु, अपनी सेवा देश को समर्पित करें। तो उन्होंने उक्त कार्य को उत्सुकता से स्वीकार करते हुये, देश सेवा को सर्वोच्च स्थान दिया। डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने सन १९४७ से १९४९ तक संविधान निर्माण सभा में अपनी अहम भूमिका अदा की।

शिक्षा और राजनीतिक क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान हेतु सन १९५४ में देश के सर्वोच्च नागरिक सम्मान भारतरत्न से सम्मानित किया गया। उन्होंने एक सफल अकादमी जीवन के पश्चात अपना राजनैतिक जीवन प्रारंभ कर दिया था। उन्हें दिनांक १३

मई १९५२ से १३ मई १९६२ तक उपराष्ट्रपति के रूप में देश सेवा की। संसद का प्रत्येक सदस्य डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन जी के व्यवहार व उनकी कार्यशैली से काफी प्रभावित थे। इसलिए सन मई १९६२ में उन्हें सर्व सम्मति से देश का राष्ट्रपति पद के लिए चुन लिया गया।

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद जी की अपेक्षा उनका राष्ट्रपति कार्यकाल काफी चुनौती पूर्ण साबित हुआ। क्योंकि उसी दौरान भारत को पाकिस्तान व चीन के युद्धों से दो-चार होना पड़ा। जहां चीन के समक्ष देश को हार का मुंह देखना पड़ा। साथ ही देश के दो प्रधानमंत्रियों का देहांत भी इसी दौरान हुआ।

सन १९६२ को डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन जी के जन्मदिन (५ सितम्बर) को सर्व सर्वसम्मति से शिक्षक दिवस के रूप में प्रतिवर्ष मनाने का फैसला लिया गया। उसी दौरान इन्हें ब्रिटिश एकेडमी का सदस्य बनाया गया, तथा इंग्लैंड सरकार द्वारा डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन जी को ऑर्डर ऑफ मेरिट सम्मान से नवाजा गया। सन १९६७ में गणतंत्र दिवस पर डॉ. राधाकृष्णन जी ने देश को संबोधित करते हुये कहा, कि आज मैं, अपना आखिरी भाषण दे रहा हूँ, शायद यह मेरा राष्ट्रपति के रूप में अंतिम भाषण होगा।

१७ अप्रैल १९७५ में डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन महापुरुष का निधन एक लम्बी बीमारी के कारण हो गया। जो कि वास्तव में देश के लिए अपूर्णनीय क्षति थी। वो सदा देश की जनता के अंत हृदय में, यादों के रूप में, एक विभूति बनकर जीवित हो गये। सन १९७५ में मरणोपरांत उन्हें अमेरिकी सरकार द्वारा टेम्पलटन पुरस्कार से सम्मानित किया गया। जो कि धर्म क्षेत्र में प्रदान किया जाता है। इस पुरस्कार को ग्रहण करने वाले वो, शायद प्रथम ऐसे महापुरुष थे, जो कि गैर ईसाई थे। जब कि उक्त पुरस्कार सभी ईसाई व्यक्तियों को ही दिया गया था।



भारतीय समाज का सहिष्णु व समावेशी स्वरूप

स्वप्नील सुभाष निकम - द्वितीय वर्ष, विद्युत अभियांत्रिकी

(माहितीपर लेखन)

संदर्भ

वर्ष २००३ में एक सम्मलेन में तत्कालीन प्रधानमंत्री अटलबिहारी वाजपेयी ने कहा था कि तमाम मतभेदों और विविधताओं के बावजूद भारत का सामाजिक-सांस्कृतिक स्वरूप समावेशी और सहिष्णु बना रहेगा। वस्तुतः उनका यह वक्तव्य देश के कुछ हिस्सों में दो प्रमुख अल्पसंख्यक समुदायों के विरुद्ध हुई हिंसा की घटनाओं के परिप्रेक्ष्य में था।

पृष्ठभूमि

भारत में संवैधानिक युग की शुरुआत के इतने वर्षों के पश्चात् भी कई लोग मौजूदा स्थिति को संविधान के विरोधाभास के रूप में देखते हैं। उनके अनुसार, यह चिंताजनक है कि नागरिकों की गरिमा, समानता और बंधुत्व के लिये किये गए वादों की पहुँच प्रत्येक नागरिक तक अभी भी सुनिश्चित नहीं हो पाई है।

क्या वर्तमान समाज महात्मा गांधी द्वारा निर्देशित सत्य, अहिंसा और शांति के मार्ग पर चलते हुए उनके विचारों के अनुरूप आचरण की प्रतिबद्धता रखता है? क्या उसमें करुणायुक्त एवं बहुलतावादी और धार्मिक रूप से सहिष्णु समाज को स्थापित करने की प्रवृत्ति है? आधुनिक समाज के संदर्भ में ऐसे ही अनेक प्रश्न विचारणीय हैं।

मानवता का मैग्राकार्टा और धार्मिक सहिष्णुता

संयुक्त राष्ट्रद्वारा मानवाधिकारों के संबंध में की गई सार्वभौमिक घोषणा को पूरे विश्व में शांति स्थापित करने के प्रयास के रूप में 'मानवता का मैग्राकार्टा' कहा जाता है।

इस घोषणा के अनुसार, सभी मनुष्य जन्म से ही स्वतंत्र होते हैं। उनकी गरिमा, प्रतिष्ठा और अधिकार एक समान होते हैं। तर्क और विवेकी होने के कारण उन्हें बंधुत्व की भावना

से युक्त होकर अपने कर्तव्यों का निर्वहन करना चाहिये।

वर्ष १९६६ में अन्य दो अंतराष्ट्रीय मानवाधिकार अनुबंधों- 'सभी प्रकार की असहिष्णुता के उन्मूलन और धर्म या विश्वास के आधार पर भेदभाव की घोषणा' (१९८१) तथा 'अल्पसंख्यकों के अधिकारों पर घोषणा' (१९९२) को जोड़ा गया।

धार्मिक आस्था की स्वतंत्रता : संवैधानिक प्रावधान

संयुक्त राष्ट्र द्वारा मानवाधिकारों की सार्वभौमिक घोषणा किये जाने के दौरान ही नव-स्वतंत्र भारत के भविष्य को निर्धारित करने के लिये संविधान का निर्माण किया जा रहा था।

संविधान-निर्माताओं ने मानवाधिकार संबंधी उत्कृष्ट शब्दों एवं भावनाओं का संविधान की उद्देशिका में शामिल किया। इसमें देश के सभी नागरिकों को समानता, स्वतंत्रता और न्याय के साथ-साथ व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता को सुनिश्चित करने का संकल्प लिया गया।

मौलिक अधिकारों के रूप में संविधान के भाग-३ के अंतर्गत उद्देशिका में निहित संकल्पनाओं को विस्तृत और दृढ़ किया गया।

राष्ट्र के सभी नागरिकों को अपने संवैधानिक कर्तव्यों के प्रति उत्तरदायित्व की आवश्यकता को देखते हुए संविधान के भाग-४ (क) के तहत मौलिक कर्तव्यों को जोड़ा गया।

इसी कड़ीमें, संविधानकेअनुच्छेद-२५ मेंदेशकेसभीवर्गोंकी 'धार्मिक-आस्था की स्वतंत्रता'को सुनिश्चित करने का प्रावधान किया गया।

स्मरणीय है कि वर्ष १८६० में 'भारतीयदंड संहिता' के

अंतर्गत धार्मिक सभाओं में व्यवधान डालने या धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुँचाने जैसी अन्य गतिविधियों के लिये दंड निर्धारित किया गया था ।

वहीं भारत का चुनाव कानून घोषित करता है कि 'चुनावके संबंध में' विभिन्न वर्गों के मध्य धर्म के आधार पर शत्रुता पूर्ण या घृणात्मक भावनाओं को बढ़ावा देना या बढ़ावा देने का प्रयास करना 'लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम', १९५१ की धारा १२५ के तहत दंडनीय अपराध है ।

पंथनिरपेक्ष राज्य पर सर्वोच्च न्यायालय का मत

सर्वोच्च न्यायालय निरंतर भारतीय संविधान के विभिन्न प्रावधानों से जुड़े निहितार्थों की व्याख्या करता रहा है । 'अहमदाबाद सेंट जेवियर्स कॉलेज बनाम गुजरात राज्य' (१९७४) मामले में सर्वोच्च न्यायालय ने स्पष्ट किया कि धर्म और भाषा की विविधता के बावजूद राष्ट्र के ताने-बाने में एक 'बुनियादी जन्मजात एकता का सूत्र' विद्यमान है ।

'एस.आर. बोम्मई बनाम भारत संघ' (१९९४) मामले में सर्वोच्च न्यायालय ने पुनः स्पष्ट किया कि भारत के संवैधानिक प्रावधान एक धार्मिक राज्य की स्थापना पर रोक लगाते हैं और राज्य को किसी धर्म विशेष का पक्ष लेने या उससे स्वयं को संबंधित करने से रोकते हैं ।

सतत् सामाजिक-संस्कृति

भारतीय संविधानमें 'पंथनिरपेक्षता' को अपनाया गया है, जो धार्मिक सहिष्णुता के निष्क्रिय स्वरूप से कहीं अधिक विस्तृत संकल्पना है । यह सभी धर्मों के साथ समान व्यवहार की सकारात्मक अवधारणा है ।

प्राचीनकाल से ही भारत में विभिन्न वर्गों, मतों, धर्मों और समुदायों के लोग निवास करते आए हैं । कभी-कभी देश के समक्ष उत्पन्न होनेवाली कुछ विषम परिस्थितियों के बावजूद भारत 'विविधता में एकता' के अनुरूप स्वयं के सामाजिक-सांस्कृतिक विकास का मार्ग प्रशस्त कर रहा है ।



कोरोना

ऐसी महामारी आई सब ओर देखो भाई,
कोरोना के नाम से जिसे जग जानता;
त्राहि-त्राहि मच गई नगर से गांव तक,
बचने को आज हर कोई दुआ मांगता।१।

रात दिन लगी रहती भीड भाड जहां-तहां,
सूने पडे हाट बाट नदियों के घाट हैं;
भोर होते पूजा-पाठ गूंजते जो शंखनाद मंद पडे,
मंदिरो के बंद जो कपाट हैं।२।

वाहनों में बैठे नित जिनका था आना जाना,
पैदल हजारों किलोमीटर चले जाते हैं;
नन्हे-मुन्ने बच्चों और पत्नी को संग लेके,
भूखे प्यासे झोला टांगे घर चले आते हैं।३।

भारत की सरकार लोगों की जो दरकार
राज्यों के साथ कार्य करती महान हैं;
कोरोना से लोहा लेने वाले वीरों ने
ही तो जान को बचाया और बचाया ये जहान हैं।४।

सब की भलाई में ही अब और आगे भी,
बंदिशे कुछ दिनों के लिए जरूरी हैं;
दाना मिले सबको खाना मिले सबको,
रोजी के लिए भी जारी कोशिशें पूरी हैं।५।

दूरियां बनाके रहना मुंह नाक ढंके रखना,
बाहर न जाए जब ना विशेष काम हो;
धैर्य और संयम का पालन करें सभी,
घर को बनाएं जैसे सारा सुरक्षाम हो।६।

धन्य हैं हमारा देश धन्य हैं सभी
प्रदेश देशवासी धन्य हैं जो श्रेष्ठ काम करते;
भारती का भाल सदा उच्च रखते जो लाल,
श्रद्धा से उनको हम प्रणाम करते।७।

ईश की कृपा मिले सबके मन कमल खिलें,
नष्ट हों विपत्तियां कोई न अभाव हो;
ऐक्य और प्रेम भाव सब में रहे भरा,
अंतर में गंगा-सा निरंतर प्रवाह हो ।८।

विनोद पांडुरंग पाटील

तृतीय वर्ष विद्युत अभियांत्रिकी

क्या सीख मिलती है हमें भगवान श्रीरामके जीवनसे?

सानिका रमेश पाटील - द्वितीय वर्ष, विद्युत अभियांत्रिकी

(वैचारिक लेख)

अगर हम बात करे तो रामायणको पुराने, मूल्यवान ग्रंथोंमेंसे एक माना जाता है जो मुख्य रूपसे भारतीय संस्कृति को दर्शाता है। यह जीवन शैलीके आदर्श तरीके को भी दर्शाता है और साथ-साथ भगवान राम और देवी सीता सभीके लिए पूर्णता के प्रतीक हैं।

रामायण में कई तरहकी बातें बताई गई हैं और वो केवल एक ग्रंथ नहीं है उससे हम को जीवन जीनेकी कला सीखनी चाहिए और साथ-साथ ये भी सीखना चाहिए कि आपको किस परिस्थिति में किस तरहका व्यवहार करना चाहिए।

दोस्तों आज हम रामायण के बारेमें बात नहीं करने जा रहे हैं लेकिन रामायण के एक ऐसे पात्र के बारे में बात करने जा रहे हैं जो सभी देवताओंमें सर्वोपरि है, तो जानते हैं भगवान राम वास्तविकता के इस दायरे में एक नश्वर प्राणी के रूपमें भगवान विष्णु के ७ वें अवतार हैं। आज हम कुछ बातें आपके साथ शेयर करने जा रहे हैं जो भगवानसे सीखने के लिए सबसे अच्छी है आप उनसे जीवन की वो महत्वपूर्ण बातें सीख सकते हैं जिनको उन्होंने खुद अपने जीवनमें अपनाया था और वो महान कहलाये और जब तक ये दुनिया रहेगी तबतक उनका नाम भी रहेगा। भगवानरामकेजीवनकी ७ महत्वपूर्ण बातें -

१. कभी हार मत मानो : सीता को लंका के राजा रावणने बंदी बना लिया था, जिस की वजह से सीता की तलाश में राम को बहुत अधिक समय लगा था।

माता सीताकी खोज में उनको बहुत अधिक समस्याओंका सामना करना पड़ा था लेकिन उन्होंने कभीभी पीछे हटने या हार मानने के बारे में नहीं सोचा, यह उनकी अपने प्रेमकी शक्ति और अपने लक्ष्यों के प्रति समर्पण था।

इसबात से हम क्या सीख ले सकते हैं -

ठीक इसी तरहसे आप जब अपने लिए कोई भी लक्ष्य बनाते हैं तो इसमें एक दिन, सप्ताह या सालभी लग सकते हैं, तो आपको कभीभी पीछे नहीं हटना है बस अपने लक्ष्य की तरफ बढ़ते ही चले जाना है।

२. विनय ही सर्वोत्तम नीति है (कभी अहंकार नहीं करना) रामजी वहां के सबसे अच्छे तीरंदाज थे। उनको बड़े अस्त्रों और शास्त्रों का पूरा ज्ञान था। लेकिन उस सारी शक्ति और ज्ञानने कभीभी उनके मार्ग में अहंकार नहीं डालाथा जिसकी वजह से उनकी विनम्रता अद्वितीय थी।

उन्होंने कभीभी अपने जीवन में अहंकार को जगह नहीं दी, वो हमेशा विनय के ही मार्गपर चलते रहे थे।

३. हर स्थितिमें शांत रहो - उन्होंने युद्धोंमें और बहुतसे राक्षसों से लड़ाई लड़ी है और उन्हें दर्दनाक अनुभव भी हुए हैं, लेकिन उन्होंने कभीभी अपना आपा नहीं खोया। अपनी भावनाओंपर एक विशाल स्तरका नियंत्रण किया है।

सीख -

स्थिति कैसी भी हो, कोशिश करें कि दिमागको ठंडा रखें। आपके घबरानेसे संकटका समाधान नहीं होगा, अगर आप खुदको शांत रखना सीख जाते हो तो आप किसीभी समस्या का समाधान आसानीसे निकाल सकते हो।

४. अपने बड़ोंका पालन करें और उनका सम्मान करें- उन्होंने कभीभी अपने माता-पिताके फैसलोंपर सवाल नहीं उठाया, भले ही उनका जीवन एक भयानक और खतरनाक हो। वह अपने पिताके कहनेपर ही थाटाकी जैसे राक्षसोंसे लड़ने के लिए तैयार रहो गये थे और अपनी सौतेली माँकी इच्छा पर निर्वासन के जीवन में चले गए थे, वे एक आदर्श बालक के

हमेशा याद रखिये कि सफलता के लिए किया गया आपका अपना संकल्प किसी भी और संकल्प से ज्यादा महत्व रखता है।

अवतार के रूपमें थे।

सीख -

हो सकता है कि आप अपने माता-पिताके कार्योंको स्वीकार न करें, लेकिन लंबे समय में हो सकता है कि उन्होंने आपके अच्छे के लिए सबसे अच्छा विकल्प बनाया हो इसलिए पहले उनकी बातें अच्छे से सुने।

एक बात हमेशा याद रखे कि आपके माता-पिता आपका कभीभी बुरा नहीं चाहेंगे इसलिए उनकी हरहाल में इज्जत करे।

५. पूर्वाग्रह कभी समाधान नहीं होता है -

जब रावण के भाई विभीषण राम के पास आए क्योंकि उन्हें अपने ही राज्यसे भगा दिया गया था, राम को कभीभी उनके खिलाफ कोई पूर्वाग्रह नहीं था, भले ही उनके कुछ लोग इस के बारे में निश्चित नहीं थे।

जब वे सभी विभीषण के ज्ञान और विशेषज्ञता के मूल्य को समझ गए और इससे उन्हें कैसे मदद मिली जिस के बाद उन्हें राम की दूरदर्शिता दिखाई देने लगी।

पूर्वा ग्रह किसी कामका हल नहीं होता है। आपने जो सामना किया है, उसके बारे में कुछ गलत लग सकता है, लेकिन सामान्य विशेषताओं को देखें और आप लोगों और स्थितियों/ अवसरोंके वास्तविक मूल्यों को देखेंगे।

६. दोस्तों का महत्व

लक्ष्मण और हनुमान भाईसे बढ़कर थे और भगवान राम के भक्त भी थे। वे रामके सबसे करीबी दोस्त थे और उन्होंने इसे बार-बार साबित किया था। एक भाई के रूपमें, उन्होंने अपने भाई भरत को राज्यकाभार और परिवार की जिम्मेदारी सौंपी थी दोस्तों हमेशा आपकी पीठ थपथपाई जाती है, चाहे आप जिस स्थान पर हों। आपका परिवार और भाई-बहन आप के जीवन में अब तकके सबसे अच्छे दोस्त हैं।

७. सबके साथ समान व्यवहार करें-

भगवान रामने सभीके साथ समान व्यवहार किया और इस तरह उन्होंने सभी के बीच प्यार और सम्मान अर्जित किया। कोई व्यक्ति चाहे छोटा हो या बड़ा, गरीब या अमीर, वह सभीके लिए एक जैसा था।

यहां तक कि जब साबरी (ऋषि की बेटी) ने उन्हें पहलेसेही स्वाद वालेबेरी फल दिए, तो उन्होंने बिना कुछ सोचे-समझे उन्हें खालिया। वह हमेशा लोगों के प्रति दयालु और विनम्र थे। हमें इस गुणको यहां रखना चाहिए।

हमें हमेशा सबके साथ समानताका व्यवहार करना चाहिए और हैसियत, उम्र या जातिके आधारपर भेदभाव नहीं करना चाहिए। हमें जानवरों के साथ समान व्यवहार करना चाहिए क्योंकि सच्चा इंसान वही है जो जानता है कि हर कोई समान व्यवहार का हकदार है।

भगवान श्रीराम के जीवन से हमें बहुत कुछ सीखने को मिलता है। खास तौर पर उनके द्वारा अपनाई गई व्यावहारिक नीतियां, यही कारण था कि कठिन परिस्थितियों में भी वे सफल रहे। कुछ और बातें जो हम उनसे सीख सकते है।

१. सभी से हंसते-मुस्कराते मिलना।

२. लोगोंके नामोंको याद रखना और उन्हें, उन्हीं नामसे संबोधित करना।

३. दूसरों की बातोंको ध्यान और धीर जसे सुनना।

४. लोगोंके प्रति सच्ची निष्ठा रखना।

५. दूसरे व्यक्तियोंको सम्मान देना।

६. किसीको अपने विचार मनवाने के लिए तर्क और विवादका सहारा नहीं लेना।

७. उच्च आदर्श व सिद्धांत का पालन करने में हर कठिनाई को सहन करनेके लिए तैयार रहना।

अंतिम शब्द :-

राम मनुष्यकी सबसे बड़ी और सर्वोच्च अवधारणा है। उन्हें मर्यादा पुरुषोत्तम यानी सर्व श्रेष्ठ इंसान कहा जाता था, जिन्होंने इंसान के तौरपर कभी अपनी हदें पार नहीं कीं।

रामायण दुनियाकी सबसे बड़ी साहित्यिक और साथ ही धार्मिक पुस्तक है। रामायण हिंदुओंके लिए सबसे महत्व पूण धार्मिक ग्रंथ है। यह दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा धार्मिक महाकाव्यहै (सबसे बड़ा निस्संदेह महाभारत है)।

एक महाकाव्य और धार्मिक पुस्तक होने के अलावा रामायणमें उच्चतम स्तरकी कूटनीति, प्रबंधन, सामरिक और रणनीतिक कदम शामिल हैं।



नारी तु शक्ति स्वरूपा...

दिपा कारवा - तृतीय वर्ष, यांत्रिकी अभियांत्रिकी

(वैचारिक लेख)

नारी तु नारायणी यह उपमा पूर्णतः सही साबित होती है क्योंकि एक नारी ही है जो अपने सम्पूर्ण जीवन में कितने ही किरदार निभाती है कभी वह अन्नपूर्णा बनती है तो कभी Money Management में वह घर की निर्माता सितारमण बन जाती है। वह अपने बच्चों की मार्गदर्शक तो है ही पर जरूरत में वह सच का साथ देने वाली न्यायमूर्ति भी बन जाती है। धरती माता की तरह ही विभिन्न रंगों को अपने अंदर समेटे वह बखूबी हर अभिनय में खरी उतरती है।

बिना नारी क्या इस विश्व की कल्पना भी की जा सकती है... नहीं कदापि नहीं

अरे खुशी हो गम एक औरत की आंखें झलक ही जाती है यह उसकी कमतरता नहीं अपितु संवेदना की परिचायकता दर्शाता है।

कई नारी शक्ति जगत में बहुत उच्च पद पर कार्यरत हैं पर हमारे घर और उसके आस पास रहने वाली अनेकों महिलाएं जिनको ना तो मान धन मिलता है ना ही नाम धन पर फिर भी बड़ी ही कुशलता से वह अपनी जिम्मेदारी निभाती हैं। मन के किसी कोने से छुपी हुई अपनी इच्छाओं के बारे में तो सोचना इससे कभी सीखा ही नहीं है।

सत्य तो यह है कि एक साधारण गृहिणी की कोई पहचान नहीं होती पर घर के हर एक सदस्य को वो ही पहचान दिलाती है।

“नारी शक्ति है सम्मान है
वही गौरव और अभिमान है
नारी से ही रचा सम्पूर्ण विधान है
हे नारी तुझे शत् शत् प्रणाम है”

नारी समाज का महत्वपूर्ण अंग है जिसके बिना समाज की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। नारी के अंदर सहनशीलता धैर्य, प्रेम, ममता और मधुर वाणी जैसे बहुत से गुण विद्यमान हैं जो ही नारी की असली शक्ति है। यदि कोई निश्चय कर ले तो वह उस कार्य को करे बिना पीछे नहीं हटती और बहुत से क्षेत्रों में बेहतरीन प्रदर्शन देती है।

उसकी स्पर्धा सदैव स्वयं से होती है और स्वयं को बेहतर बनाना ही उसका लक्ष्य होता है।

आज की नारी ने कोमलता व मधुरता के साथ-साथ निडरता को भी अपना लिया है। समय-समय पर एक नारी ने माँ, बहन, पत्नी बनकर परिवार को संभाला है। सफल व्यक्ति के पीछे एक औरत का हाथ होता है यही यथार्थता है, सत्य है, सनातन है।

हौसला हो बुलंद

जैसे कंधे पे इक दोस्त का हाथ हो
जैसे लफ्जों पे दिल की हर एक बात हो
जैसे आँखों से चिंता की चिलमन हटे
जैसे मिट जाए हर राम कुछ इतना घंटे
जैसे राहों में सपनों की कालिया खिले
जैसे दिल में उजालो के दरिया बहे
जैसे तन-मन कोई गीत गाने लगे
जैसे सोई हुई हिम्मत अंगड़ाई ले
जैसे जीना खुशी की काहानी लगे
जैसे खुल जाए रस्ते अब तक थे बंद
हौसला हो बुलंद- हौसला हो बुलंद
हौसला हो बुलंद- हौसला जैसे आस्मां से हो बुलंद
हौसला हो बुलंद

अक्षता अ. पाटील (प्रथम वर्ष विद्युत अभियांत्रिकी)

चिंता से रूप, बल और ज्ञान का नाश होता है।

दिल्ली की यात्रा – यात्रावर्णन

सृष्टी एस. पाटील – तृतीय वर्ष, मेकॅट्रॉनिक्स

(प्रवास वर्णन)

दिल्ली भारतवर्ष की राजधानी है। दिल्ली अति प्राचीन काल से ही भारत की राजधानी के रूप में प्रतिष्ठित रही है। पर्यटन की दृष्टि से भी दिल्ली अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। यहाँ की अनेक ऐतिहासिक व धार्मिक इमारतें पर्यटकों के लिए विशेष महत्व रखती है।

इसी वजह से हम सब इस छुट्टियों में दिल्ली घुमने गए थे। जून के महिने में १५ तारीख को हम सब दिल्ली के लिए प्रस्थान किया। सुबह हम सब दिल्ली पहुंच गए थे। दिल्ली शहर बहुत ही सुंदर व साफ सुथरा शहर है और बहुत बड़ा भी।

दिल्ली दो भागों में विभाजित है। दिल्ली व नई दिल्ली, पुरानी दिल्ली के प्रमुख दर्शनीय स्थल है। दिल्ली में हम सबने इंडिया गेट, लाल किला, जामा मस्जिद, कुतुब मीनार, राजघाट आदि जगह पर भी गए इन जगह पर घुमना मुझे काफी अच्छा लगा।

इंडिया गेट पहले विश्व युद्ध में शहीद हुए सेनानियों की याद में बनाया गया था। यह जगह दिल्ली की विशेष दर्शनीय स्थल में से एक है। इंडिया गेट के पत्थरों पर शहीदों के नाम भी लिख गए है। इंडिया गेट के ठीक सामने राष्ट्रपति भवन दिखता है।

लाल किला मुगल शासक शाहजहां के द्वारा बनवाया गया था। यह भारत के इतिहास में बहुत महत्व रखता है। स्वतंत्रता दिवस पर देश के प्रधानमंत्री लाल किले पर झंडा फहरा कर देशवासियों को संबोधित करते है। लाल किला बहुत ही सुंदर है और इसके पास मीना बाजार स्थित है जो बहुत ही प्रसिद्ध है।

जामा मस्जिद देश की सबसे पुरानी और सबसे बड़ी मस्जिदों में से एक है जो कि शहाजहां के द्वारा बनाई गई थी। जामा मस्जिद बहुत ही सुंदर और शांतिपूर्ण स्थान है यहां ईद के समय पर लाखों लोग ईद की नमाज अदा करने आते है। जामा मस्जिद के आसपास की जगह खाने के लिए बहुत ही प्रसिद्ध है। जामा मस्जिद पुरानी दिल्ली इलाके में स्थित है।

कुतुब मीनार दिल्ली की सबसे ऊंची इमारतों में से एक है जो कुतुबुद्दीन ऐबक के द्वारा बनवाई गई थी। कुतुब मीनार को युनेस्को विश्व विरासत स्थल में भी शामिल किया गया है या बहुत ही ऐतिहासिक और हरियाली से भरी हुई जगह है।

अक्षरधाम मंदिर दिल्ली के सबसे प्रसिद्ध पर्यटन स्थल में से एक है, यह अपनी बहुत ही सुंदर कारीगरी के लिए प्रसिद्ध है और विश्व के सबसे बड़े हिंदू मंदिरों में से एक है। यह मंदिर बहुत ही बड़ा है जिसमें सांस्कृतिक कार्यक्रम व वाटर शो आदि शाम के समय में होते है। यह सुबह ९:३० बजे से शाम के ६:०० बजे तक खुला रहता है।

इसके साथ दिल्ली में बहुत सारे सरकारी कार्यालय व संसद भवन आदि स्थित है। देश के सभी बड़े नेता दिल्ली में ही निवास करते है।

दिल्ली की यह यात्रा स्मरणीय रहेगी और निसंदेह में दोबारा दिल्ली जाना चाहूंगी। दिल्ली एक बहुत ही सुंदर स्थान है।



सपनों का सौदागर

ओमकार रामा चौगले - द्वितीय वर्ष, ऑटोमेशन अँड रोबोटिक्स

(वैचारिक लेख)

सपना... सपना हा हा हा...! क्या कुदरत का करिश्मा है। सपना यह एक ऐसी चिज है जिसे देखने के लिए ना कोई पैसा, ना कोई कश्ट, ना कोई जात, ना कोई पात लगती है। बस अपनी आँखें बंद करो और उड जाओ अपने सपनो की दुनिया में। तो चलिए मै भी आज आपको ऐसे हि एक सपनो के सौदागर कि दुनिया मे ले चलता हूँ।

सपने भी दो तरह के होते है। एक जो बंद आँखों मे दिखते है और एक जो खुली आँखों से देखते है। सपना तो हर कोई देखता है। कोई हजार सपने बुनता है, तो कोई बस एक। अक्सर हम कुछ चिजो से मोहित होकर हमारी पसंद नापसंद और उम्र के साथ बदलत है। उन चिजा के साथ-साथ ही हमारे सपने भी बदलते है। लेकिन इस दुनिया के सपनो के सौदागर ने बचपन से ही अपनी खुली आँखों मे एक ही सपना पाल रहा था। उम्र बडी, दिन पलटे, साल बदले, कई चुनौतियां आयी लेकिन चुनौतियो से लडकर, और उम्र से झगडकर वह अपने सपनो पे डटा रहा। लेकिन कही ना कही उम्र, जिम्मेदारिया और हालात उसे उसके विपरीत सोचने के लिए मजबूर कर देते है। “अपनी आँखों में दुसरो के सपने डालकर, उसे पूरा करना” बहुत अजीब लगता है न...! आज कल की दुनिया में ऐसा कौन है जो सपने नही देखता हो। किसी का कुछ बनने का सपना, किसी का कुछ खरीदने का सपना और फलाना डिमका...! लेकिन सपने उसके हि पूरे होते है जिसके सपनो में बहुत ताकत होती हो। मुसीबतो से लडकर, चुनौतियो से झगडकर और दुसरो के सपने अपनी आँखों मे सजोकर वह अपने सपनो पे डटा रहा। उसने अपने माता-पिता का सपना अपनी आँखों में सजाया लेकिन कही न कही चुनौतियां उसके सपनो को रोक रही थी। लेकिन वह डटा रहा। उसने हार नही मानी उसे अपनी काबिलियत पर पूरा भरोसा था। “हा...! भले हि देर से, पर मैं अपना सपना पूरा जरूर करूँगा” यह उसकी सोच थी।

इसी तरह उम्र बडी, दिन पलटे, चुनौतियां आयी लेकिन

वह डटा रहा। क्योकी उसे पता था की बडा व्यक्ति वही बनता है जो बडे सपने देखता है। और बडे सपने वही देखता है जिसे अपनी काबिलियत पर पूरा भरोसा हो। उसे अपनी काबिलियत पर पूरा भरोसा था और वह डटा रहा। बच्चे बहुत ही कम उम्र में बडे बडे सपने देखते है। लेकिन उस पर डटे रहना और उसके काबिल बनना वह उनपर निर्धारित होता है। यह गुण जिसमे है वही अपनी सपनो की दुनिया का सौद कर सकता है।

सपने देखो! उसके काबिल बनो! डटे रहो!



इंतजार

जो छूट गया उसका क्या मलाल करें,
जो हासिल है, चल उस से ही सवाल करें!!

बहुत दूर तक जाते है, याँदो के काफिले,
फिर क्यों पुरानी याँदो में सुबह से शाम करें।

माना इक कमी सी है, जिदगी थमी सी हैं,
पर क्यो दिल की धडकनों को दर-किनारे करें!!

मिल ही जाएगा जीने का कोई नया बहाना,
आ जरा इत्मीनान से किसी खास का इंतजार करें!!

विनोद पांडुरंग पाटील
तृतीय वर्ष विद्युत अभियांत्रिकी

स्टीफन हॉकिंग की जीवनी

रियाज मुल्ला - प्रथम वर्ष

(व्यक्तिचित्र)

“ऊपर सितारों की तरफ देखो अपने पैरों के नीचे नहीं। जो देखते हो उसका मतलब जानने की कोशिश करो और आश्चर्य करो कि क्या है जो ब्रह्मांड का अस्तित्व बनाए हुए है। उत्सुक रहो।” ऐसी महान सोच रखने वाले मशहूर व महान वैज्ञानिक स्टीफन हॉकिंग को किसी परिचय की जरूरत नहीं है। अपनी शारीरिक दुविधा से लड़ इन्होंने वो हर चीज पाई, जिसकी लोग बस कल्पना ही कर सकते हैं।

शिक्षा में बनाया कीर्तिमान

स्टीफन जब आठ वर्ष के थे तब उनके परिवार वाले सेंट अल्बान में आकर रहने लगे और यहां के ही एक स्कूल में स्टीफन का दाखिला करवा दिया गया। अपनी स्कूली शिक्षा पूरी करने के बाद स्टीफन ने ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में दाखिला लिया और यहां पर इन्होंने भौतिकी (Physics) विषय पर अध्ययन किया। कहा जाता है कि स्टीफन को गणित में रूचि थी और वो इसी विषय में अपनी पढाई करना चाहते थे। लेकिन उस वक्त ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में गणित नहीं था। बाद में इन्होंने फिजिक्स को चुना।

फिजिक्स में प्रथम श्रेणी में डिग्री हासिल करने बाद इन्होंने कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय से अपनी आगे की पढाई की। साल १९६२ में कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में डिपार्टमेंट ऑफ एप्लाइड मैथेमैटिक्स एंड थ्योरिटिकल फिजिकल (डीएएमटीपी) में इन्होंने ब्रह्मांड विज्ञान पर रिसर्च किया।

कैसे बिगडी थी सेहत

१९६३ में २१ वर्षीय स्टीफन हॉकिंग की सेहत बिगडने लगी थी। स्टीफन की बिगडती हालत देख उनके पिता उन्हें अस्पताल ले गए जहां पर उनकी जांच की गई और जांच में पाया गया कि स्टीफन को एमियोट्रोफिक लेटरल स्क्लेरोसिस (amyotrophic lateral sclerosis (ALS) नामक बीमारी है। इस बीमारी के कारण शरीर के हिस्से धीरे-धीरे कार्य करना बंद

कर देते हैं और इस बीमारी का कोई भी इलाज नहीं है। उस वक्त स्टीफन कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय से अपनी पढाई कर रहे थे। लेकिन उन्होंने अपनी इस बीमारी को अपने सपनों के बीच नहीं आने दिया। बीमार होने के बावजूद भी उन्होंने अपनी पढाई को पूरा किया और १९६५ में इन्होंने अपनी पीएचडी की डिग्री हासिल की। पीएचडी में इनके थीसिस का शीर्षक ‘प्रॉपर्टीज ऑफ एक्सपांडिंग यूनिवर्स’ था।

बेमिसाल करियर

कैम्ब्रिज से अपनी पढाई पूरी करने के बाद भी हॉकिंग इस कॉलेज से जुड़े रहे और इन्होंने एक शोधकर्ता के रूप में यहां कार्य किया।

१९७२ में डीएएमटीपी में बतौर एक सहायक शोधकर्ता अपनी सेवाएं दी और इसी दौरान इन्होंने अपनी पहली अकादमिक पुस्तक, ‘द लाज स्केल स्ट्रक्चर ऑफ स्पेस-टाइम’ लिखी थी।

१९७४ में इन्हें रॉयल सोसायटी (फैलोशिप) में शामिल किया गया।

१९७५ में डीएएमटीपी में बतौर गुरुत्वाकर्षण भौतिकी रीडर के तौर पर भी कार्य किया।

१९७७ में गुरुत्वाकर्षण भौतिकी के प्रोफेसर के रूप में भी यहां पर अपनी सेवाएं दी।

१९७९ में इन्हें कैम्ब्रिज में गणित के लुकासियन प्रोफेसर (Lucasian Professor) नियुक्त किया गया था, जो कि दुनिया में सबसे प्रसिद्ध अकादमी पद है और इस पद पर इन्होंने साल २००६ तक कार्य किया।

महत्त्वपूर्ण खोजें

१. सिंगुलैरिटी का सिद्धांत (Theory of Singularity) - १९७०

आइंस्टीन के गुरुत्वाकर्षण के सिद्धांत भी सिंगुलैरिटी के बारे में बताते हैं। उनका सिद्धांत यह है कि टाईम और स्पेस में किसी भी भारी पिंड की वजह से जो झोल पड़ जाता है, वही गुरुत्वाकर्षण है। फिर हॉकिंग को शोध के दौरान पता चला कि बिग-बैंग दरअसल ब्लैक होल का उलटा पतन ही है। उन्होंने पेनरोज के साथ मिलकर १९७० में एक शोधपत्र प्रकाशित किया और दर्शाया कि सामान्य सापेक्षता का अर्थ ये है कि ब्रम्हांड ब्लैक होल के केंद्र (सिंगुलैरिटी) से ही शुरू हुआ होगा।

२. ब्लैक होल का सिद्धांत - १९७१-७४

पहले सिद्धांत के अनुसार, ब्लैक होल का कुल सतह क्षेत्र कभी भी छोटा नहीं होगा। इसे (Hawking area theorem) के रूप में भी जाना जाता है। एक अन्य सिद्धांत के अनुसार ब्लैक होल गर्म होता है। लेकिन यह शास्त्रीय भौतिकी का एक विरोधाभास है जिसमें कहा गया है कि ब्लैक होल से गर्मी का विकीर्ण नहीं होता है। एक और ब्लैक होल का सिद्धांत है "no hair" theorem। जिसमें कहा गया है कि ब्लैक होल में विशेषताएं हो सकती हैं; उनका द्रव्यमान (mass), कोणीय गति (angular momentum) और चार्ज (charge)।

ब्लैक होल विकिरण का उत्सर्जन करता है, जो तब तक जारी रख सकते हैं जब तक कि वे अपनी ऊर्जा को समाप्त नहीं करते और वाष्पन करते हैं। इसे हॉकिंग विकिरण भी कहा जाता है।

जनवरी १९७१ में, उन्होंने "ब्लैक होल्स" नामक अपने निबंध के लिए पतिष्ठित ग्रेविटी रिसर्च फाउंडेशन पुरस्कार जीता था।

३. कॉस्मिक इन्फ्लेशन थ्योरी - १९८२

यह सिद्धांत साल १९८० में एलन गुथ (Alan Guth) द्वारा दिया गया था और वह था कि भौतिक कोस्मोलोजी में, कॉस्मिक इन्फ्लेशन वह सिद्धांत है जिसमें ब्रम्हांड महाविस्फोट के बाद शीघ्र ही फैल जाता है। इसके अलावा, हॉकिंग पहले वैज्ञानिक है जिन्होंने क्वांटम में उतार-चढ़ाव (quantum fluctuations)

की गणना की है।

४. युनिवर्स का वेव फंक्शन पर मॉडल - १९८३

स्टीफन हॉकिंग गुरुत्वाकर्षण के एक क्वांटम थ्योरी की स्थापना में रुचि रखते थे लेकिन जेम्स हार्टले (James Hartle) के साथ उन्होंने १९८३ में हार्टले-हॉकिंग स्टेट (Hartle-Hawking state) मॉडल प्रकाशित किया था। यह सिद्धांत कहता है कि समय महाविस्फोट (Big Bang) से पहले मौजूद नहीं था और इसलिए ब्रम्हांड की शुरुआत की अवधारणा अर्थहीन है। ब्रम्हांड में समय या स्थान में कोई प्रारंभिक सीमा नहीं होती है।

५. स्टीफन हॉकिंग की ब्रम्हांड विज्ञान पर आधारित टॉप-डाउन थ्योरी - २००६

थॉमस हर्टोग (Thomas Hertog) के साथ उन्होंने २००६ में एक सिद्धांत "top-down cosmology" को प्रस्तावित किया जिसमें कहा गया है कि ब्रम्हांड में एक अनूठी प्रारंभिक अवस्था नहीं थी, लेकिन कई संभावित प्रारंभिक स्थितियों की अतिपवित्रता शामिल थी। हॉकिंग का कहना है कि ब्रम्हांड में गुरुत्वाकर्षण जैसी शक्ति है इसलिए वह नई रचनाएँ कर सकता है उसके लिए उसे ईश्वर जैसी किसी शक्ति की सहायता की आवश्यकता नहीं है।

निधन : स्टीफन हॉकिंग का निधन १४ मार्च २०१८ को ७६ वर्ष की आयु में हुआ था।

स्टीफन हॉकिंग के अदभुत विचार

“चाहे जिन्दगी जितनी भी कठिन लगे, आप हमेशा कुछ न कुछ कर सकते हैं और सफल हो सकते हैं।”

“मैंने देखा है वो लोग भी जो ये कहते हैं कि सब कुछ पहले से तय है, और हम उसे बदलने के लिए कुछ भी नहीं कर सकते, वे भी सड़क पार करने से पहले देखते हैं।”

“विज्ञान केवल तर्क का अनुयायी नहीं है, बल्कि रोमांस और जूनून का भी।”

“यदि आप हमेशा गुस्सा या शिकायत करते हैं तो लोगों के पास आपके लिए समय नहीं रहेगा।”



मुलाखत अक्षयकुमार & PM के बीच अंश अमर उजाला से

रियाज मुल्ला (प्रथम वर्ष) मेकैटॉनिकस

अक्षय कुमार: जब आप गुजरात के सीएम बनकर निकले थे तो आपके अकाउंट में २१ लाख थे। हमने सुना था कि आपने अपने पैसे स्टाफ की बेटियों के नाम दे दिए थे। अगर आप बताना चाहें तो बता सकते हैं कि आपके अकाउंट में आज कितने पैसे हैं?

पीएम: विधायक बनने से पहले मेरा बैंक खाता नहीं था। विधायक बनने के बाद ही मेरा बैंक खाता खुला। मेरा स्टाफ ही मेरी सारी चीजें देखता था। उन पैसे की मुझे जरूरत नहीं थी, उसमें से कुछ पैसे मैंने सेक्रेटरी और चपरासी की बच्चियों के लिए दे दिए।

अक्षय कुमार: आप गुजराती ही हैं ना क्योंकि गुजराती पैसे बचाने में बहुत यकीन रखते हैं लेकिन आपने तो सबकुछ दे दिया।

पीएम मोदी: बहुत साल पहले मैं ऐसे ही साधारण कपड़ों में रेलवे पर भटकता रहता था। पुणे में एक बार मैं ऐसे ही चला जा रहा था। एक ऑटोरिक्षा वाला धीरे-धीरे मेरे साथ ही चलता चला जा रहा था। मुझे कुछ अजीब लगा। मैंने उससे पूछा कि आपका ऑटोरिक्षा खराब है क्या? उसने मुझसे कहा कि आप ऑटो में बैठोगे नहीं? आप समाजवादी हो क्या? इस पर मैंने उससे कहा कि नहीं मैं अहमदाबादी हूँ।

अक्षय कुमार: जैसे मैं अपने घर पर अपनी मां के साथ रहता हूँ, आपका मन करता है सर कि आपकी मां, आपके भाई, आपके सारे रिश्तेदार आपके साथ घर पर रहें?

पीएम: मैं जिंदगी की बहुत छोटी आयु में सबकुछ छोड़ चुका हूँ। बहुत छोटी आयु में... जैसे मेरी मां मुझे कहती है, अरे

भाई मेरे पीछे तुम क्यों समय खराब करते हो। मैं गांव में रहूंगी, वहां लोगों से बातें करूंगी। मां भी देखती है कि कितना बिजी शेड्यूल है।

अक्षय कुमार: मेरा जो अनुभव है कि गुस्सा निकाल लेना अच्छी बात है। मुझे जब गुस्सा आता है तो बॉक्सिंग बैग में मार लेता हूँ या समंदर किनारे जाकर जोर से चीख लेता हूँ। आपका क्या मानना है?

पीएम: मेरी जो २०-२२ साल की ट्रेनिंग है, अच्छी चीजों से नकारात्मकता को दबाना सीखा है। चपरासी से लेकर अधिकारी तक, मुझे गुस्सा करने का अवसर नहीं मिला। अंदर तो गुस्सा होता होगा, लेकिन मैं व्यक्त करने से रोकता हूँ। गुस्सा नुकसान करता है।

अक्षय कुमार: मुझे पहली मुलाकात याद है? मैंने आपको दो चुटकुले सुनाए थे, आपने भी एक सुनाया था। क्या पीएम बनने के बाद आपका ह्यूमर वही है या फिर आप कडक हो गए हैं?

पीएम मोदी: काम करने-कराने का अपना तरीका है। आप किसी को झूठ बोलकर प्रभावित नहीं कर सकते। मुझे शब्दों से खेलना पसंद है। अब बातों का गलत अर्थ निकाल लिया जा सकता है। बोलने से डर लगता है कि मैं कुछ बोलूँ और टीआरपी की वजह से गलत मतलब निकाल लिया जाए। परहेज करता हूँ। हां, लेकिन दोस्तों के साथ हंसना-बोलना होता है।



अरूणिमा सिन्हा : बहादुरी की मिसाल

समृद्धी पाटील (द्वितीय वर्ष, AIDS)

(व्यक्तिचित्र)

अरूणिमा सिन्हा (जन्म: १९८८) भारत से राष्ट्रीय स्तर की पूर्व वॉलीबॉल खिलाड़ी तथा माउंट एवरेस्ट फतह करने वाली पहली भारतीय विकलांग हैं।

अरूणिमा सिन्हा का जन्म सन १९८८ में उत्तर प्रदेश के सुल्तानपुर में हुआ। अरूणिमा की रुचि बचपन से ही स्पोर्ट्स में रही वह एक नेशनल वॉलीबॉल प्लेयर भी थी। उनकी लाइफ में सब कुछ समान्य चल रहा था। तभी उनके साथ कुछ ऐसा घटित हुआ जिसके चलते उनकी जिंदगी का इतिहास ही बदल गया। क्या थी वह घटना जिसके चलते उन्होंने नए कीर्तिमान रच दिये आइए जानते हैं।

अरूणिमा सिन्हा ११ अप्रैल २०११ को पद्मावती एक्सप्रेस (Padmavati Express) से लखनऊ से दिल्ली जा रही थी। रात के लगभग एक बजे कुछ शातिर अपराधी ट्रेन के डिब्बों में दाखिल हुए और अरूणिमा सिन्हा को अकेला देखकर उनके गले की चैन छिन्ने का प्रयास करने लगे, जिसका विरोध अरूणिमा सिन्हा ने किया तो उन शातिर चोरों ने अरूणिमा सिन्हा को चलती हुई ट्रेन बरेली के पास बाहर फेक दिया। जिसकी वजह से अरूणिमा सिन्हा का बाया पैर पटरियों के बीच में आ जाने से कट गया। पूरी रात अरूणिमा सिन्हा कटे हुए पैर के साथ दर्द से चीखती चिल्लाती रही। लगभग ४०-५० ट्रेन गुजरने के बाद पूरी तरह से अरूणिमा सिन्हा अपने जीवन की आस खो चुकी थी लेकिन शायद अरूणिमा सिन्हा के जीवन के किस्मत को कुछ और ही मंजूर था।

फिर लोगो को इस घटना के पता चलने के बाद इन्हें नई दिल्ली (New Delhi) के AIIMS में भर्ती कराया गया जहा अरूणिमा सिन्हा अपने जिंदगी और मौत से लगभग चार महीने तक लडती रही और जिंदगी और मौत के जंग में अरूणिमा सिन्हा की जीत हुई और फिर अरूणिमा सिन्हा के बाये पैर को कृत्रिम पैर के सहारे जोड दिया गया।

अरूणिमा सिन्हा के इस हालत को देखकर डॉक्टर भी हार मान चुके थे और उन्हें आराम करने की सलाह दे रही थे जबकि परिवार वाले और रिस्तेदारों के नजर में अब अरूणिमा सिन्हा कमजोर और विकलांग हो चुकी थी लेकिन अरूणिमा सिन्हा ने अपने हौसलों में

कोई कमी नहीं आने दी और किसी के आगे खुद को बेबस और लाचार घोसित नहीं करना चाहती थी।

“मंजिल मिल ही जाएगी भटकते हुए ही सही, गुमराह तो वो हैं जो घर से निकले ही नहीं।”

अरूणिमा यहीं नहीं रुकीं। युवाओं और जीवन में किसी भी प्रकार के अभाव के चलते निराशापूर्ण जीवन जी रहे लोगों में प्रेरणा और उत्साह जगाने के लिए उन्होंने अब दुनिया के सभी सातों महाद्वीपों की सबसे ऊंची चोटियों को लांघने का लक्ष्य तय किया है। इस क्रम में वे अब तक अफ्रीका की किलिमंजारो (Kilimanjaro: To the Roof of Africa) और यूरोप की एलब्रुस चोटी (Mount Elbrus) पर तिरंगा लहरा चुका हैं।

दोस्तों अरूणिमा अगर हार मानकर और लाचार होकर घर पर बैठ जाती तो आज वह अपने घर-परिवार के लोगों पर बोझ होती। सम्पूर्ण जीवन उन्हें दूसरों के सहारे गुजारना पडता। लेकिन उनके बुलंद हौसले और आत्मविश्वास ने उन्हें टूटने से बचा लिया। दोस्तों मुश्किलें तो हर इंसान के जीवन में आती हैं, लेकिन विजयी वही होता है जो उन मुश्किलों से, बुलंद हौसलों के साथ डटकर मुकाबला करता है। अरूणिमा सिन्हा हमारे देश की शान है और हमें उनसे जीवन में आने वाले दुःखों और कठिनाइयों से लडने की प्रेरणा लेनी चाहिए। हम तहे दिल से अरूणिमा सिन्हा को सलाम करते हैं।

इस तरह अरूणिमा ने वापस लौटने में सफलता हासिल की और सभी को चौंकने पर मजबूर कर दिया। Arunima ने साबित कर दिया कि अगर इंसान सच्चे दिल से चाहे तो क्या कुछ नहीं कर सकता। चाहे वह औरत हो या आदमी या फिर कोई विकलांग। अरूणिमा का कहना है कि- “इंसान शरीर से विलांग नहीं होता बल्कि मानसिकता से विकलांग होता है”। अरूणिमा की इच्छा है की वह विश्व की सबसे ऊंची चोटियों को फतह करें। जिनमें से चार उन्होंने सफलतापूर्वक फतेह कर ली है।



हम सभी को ऐसे लोगों की जरूरत है जो हमें फीडबैक (प्रतिक्रिया) दे सके। क्योंकि इन्ही के कारण हम सुधार करते हैं..

MBA-चाय वाला ...

समृद्धी पाटील - द्वितीय वर्ष, AIDS

(समीक्षा)

आज हम बात करेंगे श्री नरेंद्र मोदी जी के बाद देश के दूसरे सबसे मशहूर चाय वाले की 'प्रफुल्ल बिल्लोरे' जिन्हें लोग चइअ चाय वाला नाम से भी जानते हैं।

वर्ष २०१४ अहमदाबाद :- प्रफुल्ल नाम का एक साधारण सा लडका आपने साधारण से सपनों के साथ MBA Entrance Exam की तैयारी में लगा हुआ था। हर ग्रैजुएट लडके तरह प्रफुल्ल का सपना भी किसी बड़े से MBA College में Admission लेकर एक ठीक-ठाक सी तनखाह और एक सामान्य सी जीवन शैली हासिल करना था। पर नियति को कुछ और ही मंजूर था। तो बस यही से शुरू हो चुकी थी प्रफुल्ल बिल्लोरे की चइअ चाय वाला बनने की कहानी। **MBA chai wala story**

तीन लगातार साल मेहनत और दो Fail कोशिशें इसी के साथ हजारों चाय की प्यालियाँ। अब प्रफुल्ल पूरी तरह से टूट चूका था। तीन साल की मेहनत और प्रफुल्ल किसी भी मुकाम पर नहीं पहुंच पाया। उस वक्त प्रफुल्ल ने आपने कमरे का दरवाजा बंद किया और पूरा दिन-पूरी रात सोता रहा। इसी तरह अगले दो हफ्ते निकल गए। प्रफुल्ल को कोई अंदाजा नहीं था की वह आगे जिन्दगी में क्या करेगा।

जब आप तीन लगातार सालों तक किसी चीज को पाने की कोशिश करें और वह आपको ना मिले तब आप ऐसा महसूस करते हैं जैसा कुछ बचा ही नहीं और सब खुश खत्म हो चूका है परंतु ये जीवन का अंत नहीं होता यही तो वक्त होता है खुद को जानने का और सोचने का की आगे हम क्या कर सकते हैं।

एक नया अनुभव था प्रफुल्ल के लिए, अनुभव CAT की पढाई से लेकर इीसशी बनाने तक, इसी तरह प्रफुल्ल काम करत रहा लेकिन एक दिन आया जब प्रफुल्ल ने खुद से सवाल

पूछा की आखिर कब तक वह ऐसी बिना पहचान की जिन्दगी जीयेगा। लोग प्रफुल्ल को आवाज लगाकर Burger stall खोलने की सोची पर प्रफुल्ल किसी ऐसी चीज की तलाश में था जो पूरे देश को जोडती हो, जो सुबह दोपहर शाम हर वक्त पर हो जाये और ऐसी एक ही चीज थी वह है चाय।

जिस वक्त प्रफुल्ल ने चाय की दुकान खोलने की सोची उस वक्त प्रफुल्ल के सामने एक बर्तन की दुकान थी पर फिर भी प्रफुल्ल को चाय बनाने का समान खरीदने का साहस जुटाने में ४५ दिन लग गए। अब वक्त आ चूका था की प्रफुल्ल आपने चाय का ठेला खोले पर कैसे कहा से आएंगे? ये सवाल बरकरार था। प्रफुल्ल ने अपने पिताजी से झूठ कहा की उसे एक इंटरनेशनल कोर्स करने के लिए १५००० रुपये की आवश्यकता है और इन्हीं पैसों से प्रफुल्ल ने अपना पहला चाय का ठेला खोला।

पहले दिन प्रफुल्ल के पास कोई ग्राहक नहीं आया। प्रफुल्ल जानता था की जब तक वह अपनी मदद खुद नहीं करेगा कोई उसको मदद नहीं करेगा। प्रफुल्ल खुद ही लोगों के पास अपनी चाय लेकर जाया करता और कहता की "Hi I've Started My Chai Ki Dukaan, Would you Like To Taste It" लोग हैरान होते की अंग्रेजी बोलने वाला चाय वाला आखिर है कौन? दूसरे दिन प्रफुल्ल ने १५० रुपये कमाए अगले दिन ६०० का धंदा और धीरे-धीरे लोगों की उत्सुकता प्रफुल्ल के बारे में बढ़ती गयी, लोग प्रफुल्ल के बारे में जानना चाहते थे। लोग जान चुके थे की यह चाय वाला कोई साधारण चाया वाला नहीं है।

इसी तरह १२००, ४०००, ५००० करते-करते प्रफुल्ल का बिजनेस चल पडा। इसी वक्त प्रफुल्ल को अपने पिताजी का फोन आया उन्होंने पूछा की बेटा आप MBA करने वाले थे

“मैं उन लोगो का आभारी हु जिन्होंने मुझे ना कहा। क्यू की उन्ही की वजह से मैंने खुद उसे करना शुरू किया”

उसका क्या हुआ? अपने पिताजी की इच्छा पूरी करने के लिए प्रफुल्ल ने एक लोकल MBA College Admission लिया। पर प्रफुल्ल का मन उस College में नहीं लगा इस वक्त प्रफुल्ल ने सोचा की क्यूँ ना वह आपने चाय की दुकान को पूरे दिन चलाये, प्रफुल्ल ने खुद से कहा "No MBA Only Chai" और इसी विचार के साथ College के सातवें दिन ही प्रफुल्ल ने उेश्रशशस छोड दिया पर प्रफुल्ल आपने जिन्दगी में आने वाली अगली चुनौतियों से अनजान था। लोग प्रफुल्ल की दुकान से जलने लगे और उन्होंने जबरदस्ती प्रफुल्ल की दुकान हटा दी। मात्र दो महीनों में ही प्रफुल्ल ने आपने चाय का ठेला इस तरीके से लगाया की कोई उसे हटा न सके। प्रफुल्ल ने एक डॉक्टर से बात की और उसके हॉस्पिटल के आगे आपने ठेला लगाया इसके बदले प्रफुल्ल उस डॉक्टर को १०००० रुपये महीना देता था। प्रफुल्ल ने अपने दुकान से ही Social Service शुरू की। प्रफुल्ल ने आपने दुकान पर एक बोर्ड लगाया और उसपर लिखा के यदि किसी को जॉब चाहिए तो वह आपने नाम या हां लिख दे, जब किसी को Employee की जरूरत होती तो वह उस बोर्ड पर लिखे नंबर पर संपर्क करता। इसी तरह प्रफुल्ल के दुकान की बदो लत कई लोगों को जॉब मिली तो कुछ लोगों की शादियाँ भी होने लगी। अब तक प्रफुल्ल ने अपनी दुकान का कोई नाम नहीं रखा था। प्रफुल्ल के सभी ग्राहकों की मांग थी की दुकान का कोई नाम रखा जाये। इसी वक्त प्रफुल्ल ने अपनी दुकान को नाम दिया।

जिसे संक्षिप्त में कहते थे MBA चाय वाला। इसी तरह शुरुवात हुई एक ब्रांड MBA चाय वाला की १५००० से शुरू हुआ धंधा आज ३ करोड का हो चुका है।

निष्कर्ष : इसी संघर्ष के साथ प्रफुल्ल ने ये सिद्ध कर दिया की इंसान को किसी से प्रेरित होने की जरूरत नहीं है।

वह खुद ही अपनी कहानी का निर्माता हो सकता है।



कुछ पाना बाकी है

गुजर रही है उम्र,
पर जीना अभी बाकी हैं।
जिन हालातो ने पटका है जमीन पर,
उन्हे उठकर जवाब देना अभी बाकी हैं।
चल रहा हूँ मन्जिल के सफर में,
मन्जिल को पाना अभी बाकी हैं,
कर लेने दो लोगों को चर्चे मेरी हार के,
कामयाबी का शोर मचाना अभी बाकी है।
वक्त को करने दो अपनी मनमानी,
मेरा वक्त आना अभी बाकी है,
कर रहे है सवाल मुझे जो loser समझ कर,
उन सबको जवाब देना अभी बाकी है।
निभा रहा हूँ अपना किरदार जिंदगी के मंच पर
परदा गिरते ही तालीयाँ बजना अभी बाकी है,
कुछ नहीं गया हाथ से अभी तो, दीप
बहुत कुछ पाना बाकी हैं...

दिक्षा अरुण कांबळे,
प्रथम वर्ष स्वयंचलन यंत्रमानव अभियांत्रिकी

कोई अपना

कोई अपना अपना न रहा।
कोई सपना सपना न राह।
पर कुछ सपनों के मर जाने से जीवन
नहीं मरा करता है।
कुछ पानी के बह जाने से सावन नहीं
मरा करता है।
यू तो बचपन के खिलौने
देखकर आंखे भर आती है।
कुछ खिलौने के खो जाने से
बचपन नहीं मरा करता है।
ये जिन्दगी हैं जनाब यहां तो
कुछ रिश्ते झूठे हैं, कुछ रिश्ते सच्चे हैं,
पर कुछ मुखड़ों की नाराजी से
दर्पण नहीं मरा करता है।

मंगल बाबासो चव्हाण
प्रथम वर्ष स्वयंचलन व यंत्रमानव अभियांत्रिकी

वीर सेनाओं की कहानी

‘तुम मत आओ, मैं संभाल लूंगा’ ये कहते हुए अलविदा करने वाले जांबाज की कहानी

वैष्णवी अरविंद माने - द्वितीय वर्ष, विद्युत अभियांत्रिकी

(वैचारिक लेख)

संदीप की बहादुरी की कहानी

२६/११ के आतंकी हमले ने पूरे देश को झकझोर दिया था। जब भी देश मुंबई हमले को याद करता है, तब अमर शहीद मेजर संदीप उन्नीकृष्णन की भी याद आती ही है। उस हमले में संदीप ने अपनी जान की परवाह किए बगैर देश के लोगों, अपने वतन की हिफाजत के लिए अपनी जान न्योछावर कर दी। अपनी जान पर खेलकर कई लोगों की जान बचाने वाले मेजर संदीप उन्नीकृष्णन का जन्म १५ मार्च १९७७ को हुआ था। चलिए जानते हैं कैसे संदीप उन्नीकृष्णन ने २६/११ हमले का डट के सामना किया।

मेजर संदीप उन्नीकृष्णन भारतीय सेना के एनएसजी कमांडो थे। २६/११ को उन्हें ताज महल होटल के सुरक्षा की जिम्मेदारी सौंपी गई थी। संदीप १० कमांडो के दल के साथ होटल के छठवें तल पर पहुंचे, जहां उन्हें महसूस हुआ कि आतंकवादी तीसरे तल पर छुपे हैं। आतंकियों ने कुछ महिलाओं को बंधक बनाया हुआ था। दरवाजा तोड़कर उन्होंने गोलीबारी का सामना किया, जिसमें कमांडो सुनील यादव घायल हो गए। मेजर संदीप ने अपने प्राणों की चिंता न करते हुए सुनील को वहां से निकाला, लगातार गोलीबारी का जवाब देते रहे और भागते हुए आतंकवादियों का पीछा भी किया।

संदीप के अंतिम शब्द

इसी हमले और गोलियों की बौछार के बीच संदीप के अंतिम शब्द थे, “ऊपर मत आना, मैं उन्हें संभाल लूंगा”, ये

बात उन्होंने अपने साथियों को कही थी। इतना कहने के बाद ही वो आतंकवादियों की गोलियों का शिकार हो गए।

अशोक चक्र से सम्मानित

शहीद संदीप उन्नीकृष्णन को उनकी बहादुरी के लिए उन्हें २६ जनवरी २००९ को सर्वोच्च पुरस्कार अशोक चक्र से सम्मानित किया गया।

शहीद संदीप से जुड़ी बातें -

- ताज होटल में आतंकियों से भिड़कर १४ लोगों को सुरक्षित बचाया।
- कारगिल में लड़ते हुए पाकिस्तान के कई फौजियों को ढेर किया था।
- सेना के सबसे मुश्किल कोर्स ‘घातक कोर्स’ में टॉप किया था।

कैप्टन विक्रम बत्रा ने जब इस चोटी से रेडियो के जरिए अपना विजय उद्घोष यह दिल मांगे मोर कहा तो सेना ही नहीं बल्कि पूरे भारत में उनका नाम छा गया। इसी दौरान विक्रम के कोड नाम शेरशाह के साथ ही उन्हें कारगिल का शेर की भी उपाधि दी गई। अगले दिन चोटी ५१४० में भारतीय झंडे के साथ विक्रम बत्रा और उनकी टीम का फोटो मीडिया में आ गयी।



पिताजी

पंकज दिपक आरगे - तृतीय वर्ष, विद्युत अभियांत्रिकी

(एकांकिका)

रवि ऑफिस से आते ही सीधे कमरे की तरफ़ चला गया. बैठक में बैठे पिता, जिनकी आंखें उसके आने के समय बाहर टिक जाती थीं, उसके आते ही निश्चित हो कमरे में चले जाते. ये उनका रोज़ का नियम है. आज ही नहीं उसके बचपन से. ५-१०-१५ मिनट ऊपर होते ही उनकी बेचैनी शब्दों में निकलने लगती.

बहू, रवि आया क्यों नहीं? आज तो रोज़ से भी ज़्यादा देर कर दी. अरे, इतनी देर तो वो कभी नहीं करता.

सोनू पापा को फोन कर क्या बात है?

इन सब का जवाब एक ही होता

आ जाएंगे! कभी काम में देर हो जाती है, कभी ट्रैफिक

और जब उनकी आवाज़ ज़्यादा सुर पकड़ लेती, तो खीज निकलती; रोज़-रोज़ की यही परेशानी. बच्चे थोड़ी ना हैं. परेशान करके रख देते हैं. और पिताजी अपनी बातों को उनके बेफ़िज़ूल के जवाब के आगे दबता देख, बाहर की हर आवाज़ पर दरवाजे तक पहुंच जाते. उम्र अधिक है इसलिए चाल थोड़ी धीमी पड़ गई है. कैसे समझाएं रवि के लिए ये बेचैनी आज की थोड़ी है. बचपन से उसको लेकर उनका यही प्रेम है. उसके इंतज़ार की सीमा उनके बर्दाश्त के बाहर हो जाती है. आज भी रोज़ की तरह दरवाज़ा खोलते ही वही वाक्य दोहराया, इतनी देर कर दी? सब ठीक..? फोन कर दिया करो; और हमेशा की तरह थका-हारा रवि, पिताजी, चिंता मत किया करो. सब परेशान हो जाते हैं.; और मुस्कुराकर अंदर चल देता.

यह परेशानी नहीं थी कि वो साथ नहीं बैठता लेकिन उसके घर आने के बाद वो निश्चित हो जाते और बैठक छोड़. अपने कमरे का रुख कर लेते. आज जब ऑफिस से आकर वो कमरे

में था, तो अचानक भूकंप के झटके महसूस हुए. वो फुर्ती से उठ बीवी-बच्चे को बाहर भागने की हिदायत देते हुए उन्हें खींचता हुआ तेजी से बाहर भागा. जानता था उन्हें सुरक्षित छोड़ वापस जल्दी आना संभव होगा.

पिता जो दूसरे कमरे में बैठे थे. चल कर जितना कमरे से बाहर आ सकते थे घबराए हुए, रवि रवि करते बाहर निकले.

जब उन्होंने देखा रवि अपनी बीवी-बच्चे को लेकर बाहर भागा है, तो वे स्तब्ध.. वहीं खड़े रह गए.

रवि उन्हें देखकर एक क्षण भी नहीं रुका साथ ही, पिताजी आइए, पिताजी आते रहिए; कहता बाहर को भागा.

भूकंप के झटके रुक-रुक कर आ रहे थे. बेशक नुकसान कुछ दिखाई नहीं दिया, लेकिन लोगों की डर भरी चिल्लाने की आवाज़ भयावह थी.

रवि को अपने परिवार सहित बाहर भागते देख पिताजी के पांव जैसे जम से गए. उन पर अब डर, भूकंप किसी का असर न था. उन्हें लगा उनकी किसी को कोई ज़रूरत नहीं. वे बेवजह जी रहे हैं. एक बोझ की तरह.

वे जिस बेटे को अपने जीवन का आधार मानते थे उसे अपने पिता से कोई सरोकार नहीं. उसने एक बार भी उन्हें बाहर ले जाना ज़रूरी नहीं समझा अंदर तक टूटे हुए पिताजी पर जैसे बिजली टूट पड़ी हो. उन्हें जीने का कोई मक़सद नज़र नहीं आ रहा था.

रवि के बचपन से आज तक के एक-एक पल आंखों के आगे आ गए. धर्मपत्नी का चले जाना और उस छोटे से बच्चे को माता-पिता दोनों का स्नेह देना. उन्होंने हमेशा यही तो ईश्वर से चाहा कि उन्हें उसके लिए बनाए रखे.

लेकिन क्या ये प्रेम एक तरफ़ा ही था?... शादी और बच्चे के बाद क्या उनका बेटे की जिंदगी में कोई अस्तित्व नहीं..?

उसी क्षण उनकी जीने की चाहत जाती रही. वो निढाल होकर गिर पड़े. कहते हैं, इंसान जब मन से परास्त हो जाए, तो वो पूरी तरह टूट जाता है. उन दो मिनटों में पिताजी की जैसे दुनिया ही उजड़ गई. उनकी आंखों से आंसू गिरने लगे. आसपास का शोर हो या डर किसी का उन पर कोई असर न था.

इतने में किसी ने बांह पकड़ आवाज़ लगाई, पिताजी हिम्मत मत हारिए. उठिए, जल्दी करिए. तीन झटके आ चुके हैं, बेशक सब ठीक है, लेकिन हमें सावधानी बरतनी होगी.;

तू अंदर क्यों आया रवि तू जा मेरी चिंता छोड़, तू जा, चला जा. बहुत कहने के बाद जब पिताजी नहीं माने, तो रवि वहीं बैठ गया.

किस्मत में लिखा होगा, तो हम दोनों सही सलामत रहेंगे, नहीं तो आपके आशीर्वाद के बिना मैं अकेला जी नहीं पाऊंगा

आत्मग्लानि से भरे पिताजी एक कदम भी नहीं चल पाए और कुछ ही पल में बेहोश हो गए. रवि भी उनके साथ वहीं बैठा रहा. बाहर से लोगों के चिल्लाने की आवाज़ें आ रही थीं. कुछ समय बाद सब शांत हो गया. थोड़ी- थोड़ी देरी में भूकंप के चार झटके महसूस हुए.

कोई जान-माल का नुक़सान नहीं हुआ. घरों में दरारें ज़रूर आईं, लेकिन मन की दरारें पूरी तरह भर चुकी थीं.

पिताजी समझ गए बेटा उन्हें आज भी उतना ही प्यार करता है और वही प्यार वो अपने परिवार से भी करता है, बस समय की व्यस्तता और बढ़ती ज़िम्मेदारी ने उसे सब ओर से घेर लिया है. उसके फ़र्ज़, ज़रूरतें और ज़िम्मेदारियां बढ़ चुकी हैं. ग़लत कोई नहीं होता, बस किसी भी बात पर हमारा नज़रिया दूसरे से भिन्न होता है.



मुश्किल

जिन्दगी के लिए इक़ खास सलीका रखना
अपनी उम्मीद को हर हाल में जिन्दा रखना
उसने हर बार अंधेरे में जलाया खुद को
उसकी आदत थी सरे-राह उजाला रखना
आप क्या समझेंगे परवाज किसे कहते हैं।
आपका शौक है पिंजरे में परिंदा रखना
बंद कमरे में बदल जाओगे इक़ दिन लोगो
मेरी मानो तो खुला कोई दरिचा रखना
क्या पता राख़ में जिन्दा हो कोई चिंगारी
जल्दबाजी में कभी पाँव न अपना रखना
वक्त अच्छा हो तो बन जाते हैं साथी लेकिन
वक्त मुश्किल हो तो बस खुद पे भरोसा रखना

मयूरी सुजित पाटील

चोट

जिंदगी में गर सोचिए तो
कुछ कभी पूरा होता नहीं...
अपनों से जब चोट लगती
आदमी खुलकर रोता नहीं...
मीठे फल जो खाना चाहे
वो कड़वे बीज बोता नहीं...
चिंताओं की उधंडबुन में
कोई रात भर सोता नहीं...
जो हमेशा है दिख रहा
वो वास्तव में होता नहीं...
जो वास्तव में सदा होता
वो सामने से दिखता नहीं...
पूर्णविराम रखे उडान पर
उडने से कुछ मिलता नहीं...
हमेशा खुशी से ही हम रहे
दुःखी कभी हँस पाता नहीं...

प्रथमेश उदय कुंभार

अंधविश्वास

दिव्या अरुण सुतार - प्रथम वर्ष, स्वयंचलन व यंत्रमानव अभियांत्रिकी

(वैचारिक लेख)

अंधविश्वास एक ऐसी समस्या जिसका समाधान सामने होते हुये भी कोसो दूर हैं. विश्वास टूट कर बिखरता हैं अंधविश्वासमजबूती से खड़ा होता हैं. खोखला हैं लेकिन मजबूती की जड़े लिये हुये जिसे समझते हुए भी कोई स्वीकारना नहीं चाहता. आज का समय जिस तरह से बुराइयों को अपने अंदर समाय हुए हैं. मनुष्य सगे से सगे रिश्ते पर भी विश्वास नहीं कर सकता लेकिन इसके बावजूद कई ऐसे अंधविश्वास हैं जिसका शिकार आज हर एक तीसरा व्यक्ति हैं फिर चाहे वो पढ़ा लिखा हो या अनपढ़.

क्या हैं अंधविश्वास :

किसी भी बात को बिना सोच समझ के, बिना किसी आधार के चरम सीमा के परे जाकर करना एवम मानना अंधविश्वास हैं फिर वो भगवान की भक्ति हो या किसी इन्सान की. कई बार भगवान की भक्ति में इस कदर खो जाते हैं कि कोई भी उनसे भगवान के नाम पर कुछ भी करवाले वो झट से कर देते हैं. यह ईश्वर के अस्तित्व में आस्था नहीं बल्कि ईश्वर के नाम पर अंधविश्वास हैं.

अंधविश्वास के उदहारण:

कई तरह के अंधविश्वास होते हैं जिनमे कुछ मान्यता होती हैं जो नुकसान नहीं देती और कुछ ऐसी मान्यता होती हैं जो नुकसान पहुंचाती हैं. इसकी कोई गिनती नहीं की जा सकती. कुछ बाते हैं जो आपने अक्सर सुनी होगी जैसे :

१. ३ और १३ नंबर अशुभ होता हैं :

कई लोग इस संख्या को अशुभ मानते हैं और इन तारीखों पर कोई शुभ काम नहीं करते. यहाँ तक की कई लोग तीन रोटी नहीं खाते. कई देशो में तेरह संख्या को अशुभ मानते हैं उस नम्बर के माले पर नहीं रहते ना ही उस नंबर के फ्लैट लेते हैं.

२. छींक आने पर रुकना :

कई लोग छींक को बहुत बुरा शगुन समझते हैं. अगर घर से बाहर निकलते वक्त कोई भी छींक दे तो वो बैठ जाते हैं. कहा जाता हैं छींक के कारण आप जो भी काम करने जा रहे हैं वो बिगड़ जायेगा और व्यक्ति इसी डर के कारण छींक को बुरा मानने लगता हैं.

३. काँच टूटना :

लोगो के अनुसार काँच के टूटने से बुरी खबर आती हैं. अनजाने में काँच टूट जाता हैं और लोग डर जाते हैं इसके लिए वे भगवान को मनाने लगते हैं.

- कौये की आवाज सुनकर कहते हैं घर में मेहमान आयेगा.

- हथेली में खुजाल आये तो कहते हैं पैसा मिलेगा.

- पैर में खुजाल आये तो कहते हैं कहीं बाहर जाने का योग हैं. ऐसे ही कई अंधविश्वास हैं जिससे मनुष्य ग्रसित हैं लेकिन ये अंधविश्वास किसी का ज्यादा कुछ बिगाड़ते नहीं

लेकिन तकलीफ देय जब होता हैं तब कुछ अंधविश्वास अपनी सीमा लांग जाते हैं जैसे

- विधवा, बाँझ, तलाकशुदा और अनाथ लोग अपशगुनी हैं उन्हें हर अच्छे कार्य से दूर रखा जाये. यहाँ तक की

- उनका मुख देखना भी लोग पाप समझते हैं.

- विधवा औरत रंगीन वस्त्र नहीं पहन सकती और भी कई दकियानुसी बाते.

- ज्योतिष ज्ञान को भी कई लोग इतना ज्यादा मानने लगते हैं कि बिना उनके ज्योतिष के वे एक कदम भी आगे नहीं रखते. हर एक बात को सीमा के परे जा कर मानना एवम करना भी एक तरह का अंधविश्वास हैं.

भारत में फैलता अंधविश्वास :

● सबसे बड़ी अंधश्रद्धा वह हैं जब मनुष्य किसी अन्य मनुष्य को भगवान का दर्जा दे बैठता हैं फिर वो व्यक्ति जो कहे उसे बिना किसी सवाल के, बिना किसी समझ के मानता हैं, और करता हैं. वो इस अंधविश्वास में इस कदर गुम हो जाता हैं कि उसे अपना पराया, सही गलत कुछ भी दिखाई नहीं देता. इस बात का फायदा सामने भगवान बन बैठा वो धूर्त उठाता हैं. इस अंधविश्वास के कारण कई घर तबाह हो गये. लेकिन फिर भी इसे स्वीकार कर मनुष्य अपनी गलती नहीं सुधारता.

क्यों होता है अंधविश्वास ?

इसके पीछे कई कारण हो सकते हैं जिसमे हैं पुश्तैनी मान्यता और सबसे अहम् हैं डर. बरसो से जो बाते चली आ रही हैं उनका आधार हो या ना हो वो पीढ़ियों तक निभाई जाती हैं जिसके कारण अंधविश्वास बढ़ता ही जाता हैं जैसे हमारे घर में काला रंग नहीं पहनते. शादी के सवा महीने तक लड़की काला या सफ़ेद नहीं पहनती. प्रथा का नाम देकर कई सालों के अंधविश्वास पीढ़ियों तक निभायें जाते हैं. डर एक ऐसी बीमारी जिसका इलाज किसी के पास नहीं लेकिन फिर भी यह इलाज ढूँढे जाते हैं और इसी के कारण उत्पन्न होता है अंधविश्वास. जैसे घर से बाहर निकलते वक्त छींक आ जाये तो व्यक्ति कहीं बैठने की जगह ढूँढता हैं. बिल्ली रास्ता काट जाये तो किसी के निकलने की रास्ता देखता हैं. ऐसे ही कई अनगिनत मान्यतायें

जिसमे फंस व्यक्ति अपने आप को डराता हैं. वास्तव में इन सबके पीछे छिपा हैं व्यक्ति का डर. एग्जाम में फ़ैल होने का डर, बीमारी होने का डर, नौकरी ना मिलने का डर, एक्सीडेंट का डर, मरने का डर आदि कई ऐसे डर जिसके कारण व्यक्ति अपने आपको कमजोर महसूस करता हैं, उसे दूर करने के लिए कई तरह के कार्य करता हैं और वही कार्य उसे कहीं ना कहीं अंधविश्वासी बना देते हैं.

सबसे पहले व्यक्ति कई तरह के टोटके अपनाता हैं जैसे नींबू मिर्ची. नींबू जितना खाने में इस्तेमाल नहीं होता उतना दुकानों और गाड़ियों में लगा होता हैं. इसके बाद हैं कुंडली दिखाना फिर कई तरह के उपाय में फँस जाना.

भारत देश में सबसे ज्यादा अंधविश्वासी हैं क्यूंकि यहाँ भगवान को अधिक माना जाता हैं जिसका कई लोग गलत फायदा उठाते हैं. ईश्वर में आस्था जरूरी हैं जीवन को दिशा देने के लिए मन में श्रद्धा होना जरूरी हैं लेकिन सही गलत का विचार भी जरूरी हैं. मनुष्य को सबसे उपर मानव धर्म को रखना चाहिये उसके आस-पास सही गलत का अवलोकन करना चाहिए.

आज कल हर एक गली मोहल्ले, शहर में एक भगवा चौला ओढे मिलता हैं और उसके कई अनुयायी बन जाते हैं. सन्यासी का भेस लिये वो लोग राजनीती, फ़िल्मी, टेलीविजन की दुनियाँ में चमक रहे हैं. और लोग उनके पीछे अपना घर द्वार त्याग उनके चरणों में पड़े हुए हैं जो मनुष्य खुद राजनीति और फेम का मोह नहीं छोड़ पाता वो आपको कैसे वैराग्य सिखा सकता हैं. कैसे पढ़े लिखे होकर भी मनुष्य सही गलत का आंकलन भूल गया हैं. कैसे किसी ज्ञानी महात्मा और एक लोभी व्यक्ति में मनुष्य अंतर नहीं कर पा रहा हैं और बढ़ते समय के साथ इसका गुलाम होता जा रहा हैं.

१. अंधविश्वास का उपाय

● खुद पर भरोसा करें :

इसका एक मात्र उपाय हैं अपने आप पर भरोसा. कड़ी मेहनत लगान और संकल्प से अपने पथ पर चलने वालों को मंजिल मिलती ही हैं. इसके लिए कोई टोटका काम नहीं आता. मेहनत ही वो आखरी टोटका हैं जो आपको आपकी मंजिल तक पहुँचा सकता हैं.

● डर को दूर करें :

डर जिसके कारण ही अन्धविश्वास जन्म लेता हैं मनुष्य को सबसे पहले अपने डर का सही कारण तलाशना चाहिये और उस कारण का एक बेहतर उपाय खोजना चाहिये. डर जब ही महसूस होता हैं जब मनुष्य किसी न किसी बात को लेकर अपने अंदर कमी महसूस करता हैं. अगर मनुष्य उस कमी को पूरा कर दे तो खुद ही डर खत्म हो जाता हैं और आत्मविश्वास पनप जाता हैं. ऐसे स्थान पर अन्धविश्वास का कोई सांया नहीं होता.

● कर्मठ बने :

मनुष्य अगर कर्मशील हैं तो उसमे अंधविश्वास की कोई जगह नहीं होती. कई बार हम जो चाहते हैं वो हमें नहीं मिलता और हम उसे पाने के लिए कई तरह के अलग रास्ते अपनाते हैं जबकि शायद उस चीज को पाने के लिए जो काबिलियत होनी चाहिये वो हममे नहीं है और हम उसी बात को सही वक्त पर स्वीकार नहीं करते और कहीं न कहीं टोटके, तंत्र मंत्र और कई अवैज्ञानिक तरीकों का शिकार हो जाते हैं. मनुष्य को सदैव अपने कर्म पर विश्वास करना चाहिये और उस रास्ते पर मिलने वाली सफलता एवम असफलता से सीखना चाहिये.

● सच्चाई का सहजता से स्वीकार करें :

कई बार हमें सफलता मिलती है कई बार असफलता हाथ आती है. हम निराश हो जाते हैं जबकि हमें उस एक बिंदु पर खुद को परखने की जरूरत है कि क्या वास्तव में हम जिस राह पर हैं हम उसके लायक हैं या नहीं.

अगर हैं तो हमें गलतियों से सीख कर आगे बढ़ना चाहिए और अगर आपको जवाब मिलता है कि नहीं हम लायक नहीं हैं तो उसे सहर्षता से स्वीकार करना चाहिये और अपने लिए नया और अपनी काबिलियत के मुताबिक रास्ता ढूंढना चाहिए.

यह सभी उपर लिखे वे सब उपाय हैं जो मनुष्य को किसी भी बात के अन्धविश्वासी होने से बचाते हैं. और इन्ही उपाय से मनुष्य में आत्म विश्वास बढ़ता है.

१. अंधविश्वास पर दोहे

● मूर्ति धरि धंधा रखा, पाहन का जगदीश मोल लिया
बोलै नहीं, खोटा विसवा बीस

अर्थात :

यह कबीर दास जी का दोहा है जो बहुत विस्तार को अपने अंदर समाये हुये हैं वे कहते हैं आज लोग ईश्वर की मूर्ति को खरीद उसका धंधा करते हैं वो पत्थर की मूर्त को भगवान कह कर खुद पैसा कमाते हैं जिस ईश्वर को वो मोल लेते हैं उसे खुद कुछ नहीं मिलता लेकिन उसके नाम पर एक खोटा बिना काम का व्यक्ति महान बन जाता है.

विस्तार यही है ईश्वर की आस्था मन एवम सत्कर्म से जाहिर होती है उसके लिए धार्मिक आडम्बर व्यर्थ हैं.

● भेष फकीरी जे करै, मन नहिं आये हाथ।

दिल फकीरी जे हो रहे, साहेब तिनके साथ।

अर्थात :

महान कवी संत मलूक ने कहा है फ़कीर के कपड़े पहने, भगवा धारण करने से उस मनुष्य का मन, चरित्र निर्मल अर्थात साधू का नहीं हो जाता, उसके उपर ईश्वर का हाथ नहीं आ जाता है. जिसके मन में फकीराना भाव होते हैं, जो मन से निश्छल होता है, ईश्वर उसी के साथ होता है.

कोशिश

तू जिंदगी को जी
उसे समझने की कोशिश न कर

सुंदर सपनों के ताने बाने बुन
उसमें उलझने की कोशिश न कर

चलते वक्त के साथ तू भी चल
उसमें सिमटने की कोशिश न कर

अपने हाथों को फैला, खुलू कर साँस ले
अंदर ही अंदर घुटने की कोशिश न कर

मन में चल रहे युद्ध को विराम दे
खामख्वाह खुद से लडने की कोशिश न कर

कुछ बातें भगवान पर छोड़ दे
सब कुछ खुद सुलझाने की कोशिश न कर

जो मिल गया उसी में खुश रह
जो सुकून छीन ले वो पाने की कोशिश न कर

रास्ते की सुंदरता का लुप्त उठा
मंजिल पर जल्दी पहुंचने की कोशिश न कर।

रियाज मुल्ला (प्रथम वर्ष)

पापा की परी हूँ मैं

कौशिका मंगेश सुतार – प्रथम वर्ष, स्वयंचलन व यंत्रमानव अभियांत्रिकी

(वैचारिक लेख)

मेरी बेटी जो बड़े ही कौतूहल से खिड़की के बाहर देख रही थी, अचानक बादलों की एक सुंदर आकृति देखकर खुशी से चीखी, वो देखो सफ़ेद महल. उसी में परियां रहती हैं न?

मुझे याद आया कि बचपन में बादलों में बने परियों के देश की कहानी पढ़कर मैं पापा से पूछती, पापा, मैं परी हूँ, तो मेरे पंख कहां हैं? मैं कब उड़ूंगी? आप मुझे लाने के लिए बादलों पर चढ़े कैसे?

उफ़! कितना बोलती है ये. हर समय पटर-पटर. दादी बोल उठती थीं और पापा मुझे हंस कर गोद में उठा लेते और कहते, पंख पढ़ाई करने से उगते हैं. देखना एक दिन तुम ज़रूर उड़ोगी. और आज मुझे लग रहा था कि मैं सचमुच की परी बन गई थी. बादलों के ऊपर से उड़कर पापा के पास जा रही थी.

हालांकि ये मेरी पहली हवाई यात्रा नहीं थी. पर्यटन के सिलसिले में जाने कितनी बार हवाई यात्रा की है, पर पति के साथ. लेकिन आज पहली बार अकेले वो भी तीन महीने के बेटे और तीन साल की बेटी को लेकर मैं घर से एयरपोर्ट आई और विमान पर बैठी. मेरी जैसी डरपोक लड़की के लिए ये सचमुच बहुत बड़ी बात थी. मैंने इत्मीनान से पलकें मूंद लीं और मन को बादलों की तरह अतीत के आसमान में खुला छोड़ दिया. दादी का वाक्य नशतर की तरह दिल में चुभ रहा था. हालांकि पापा ने तुरंत फोन रख दिया, पर मैं दादी की बात सुन चुकी थी.

ऊके आवे की बात न जोहो. छोरा छोरा ही रहे है और छोरी छोरी ही. अब मेरा और दादी का शीत युद्ध अपने चरम पर पहुंच चुका था. बस हार या जीत बची थी. लेकिन कैसी अनोखी लड़ाई थी ये? लड़ मैं और दादी रह थे और हार-जीत पापा की होनी थी. मुझे लगा कि पापा ने अपना जीवन दांव पर लगा दिया है मुझे जीतने का संबल देने के लिए. नहीं तो ऐसा क्या था पापा के मन में कि ठीक होने की इच्छा शक्ति नहीं रही? पापा तो हम सब की ही नहीं, सारे ज़माने की प्रेरणा हुआ करते थे. बेबाक बिंदास, जुझारू और ज़िंदादिल. मैं बिल्कुल अपने पापा पर ही तो गई थी.

छह महीने पहले पापा की दुर्घटना के बारे में सुना, तो हूक

सी उठी कि काश, मैं परी होती और उड़ कर अपने पापा के पास पहुंच जाती. पर मैं परी नहीं थी. सामान्य औरत थी और औरत के जीवन की सबसे महत्वपूर्ण भूमिका में थी. ये मेरी दूसरी प्रेग्नेंसी थी. छह माह की प्रेग्नेंसी और इतने सारे कॉम्प्लिकेशंस. ऐसे में डॉक्टर ने मुझे यात्रा की अनुमति नहीं दी. मैं मन मसोस कर रह गई, पर पापा की चिंता मेरा पीछा न छोड़ती.

दुर्घटना के इन छह महीनों ने पापा को कितना बदल दिया था, ये तो फोन पर पापा की आवाज़ सुनकर ही मालूम हो जाता था. कार दुर्घटना में पापा की पीठ में ऐसी चोट लगी कि वे बिस्तर पर आ गए. दोनों भैया जी जान से सेवा में लगे थे, पर पापा किसी की सुनते कहां थे. पापा की हड्डी जुड़ चुकी थी. आगे का इलाज उस फिज़ियोथेरेपी से होना था जिसके लिए बहुत आत्मबल, इच्छाशक्ति और किसी दृढ़ व्यक्ति के साथ की ज़रूरत थी. पापा ने वो ट्रीटमेंट लेने से इनकार कर दिया था. डॉक्टर का कहना था कि उनका शरीर इलाज स्वीकार नहीं रहा, क्योंकि मन टूट गया है. पापा टूट चुके थे. वो पापा जो मेरी ताकत थे, मुझे अपनी परी कहते थे.

भैया, दीदी मुझे 'पापा की लाडली' कहकर चिढ़ाते थे. सब जानते थे कि यूं तो पापा सबको प्यार करते हैं, पर मेरी कोई बात वो टाल नहीं सकते. और तो और, हम सबका स्कूल साधारण और इसका एडमिशन शहर के सबसे महंगे स्कूल में जब छोटे भैया ने गुस्से में एक बार ये कह दिया, तो मम्मी ने सबको बैठाकर पूरी कहानी सुनाई.

मैं पापा की चौथी संतान थी, पर सबसे पहले जिस नवजात शिशु को पापा ने गोद में उठाया था, वो मैं थी. भरे- पूरे संयुक्त परिवार में दादी का वर्चस्व चलता था. जिस ज्योतिष की वो भक्त थीं, उन्होंने बताया था कि मां को पहली बेटी होगी. वो बहुत भाग्यशाली होगी. उसी के भाग्य से उसके बाद सभी बेटे होंगे, इसीलिए दीदी दादी को बहुत प्यारी थी और दोनों भाई इसलिए क्योंकि वो खानदान के चिराग़ थे. पर मुझे उन्होंने अपने गुरु की

भविष्यवाणी गलत सिद्ध करने के लिए कभी माफ़ नहीं किया। जब मैं हुई, तो मां बहुत कमज़ोर हो गई थीं। दादी ने मुझे गोद में उठाया नहीं। तब पापा ने पहली बार इतने छोटे बच्चे को डरते-डरते बहुत संभाल कर गोद में उठाया और सीने से लगाकर कहा, ये तो बिल्कुल परी जैसी है। और मेरा नाम परी पड़ गया। मेरे होने के कुछ दिनों बाद भी जब मम्मी ठीक न हुई, तो पापा ने उन्हें डॉक्टर को दिखाया। पता चला कि उन्हें तपेदिक है। नवजात शिशु को छूने की उन्हें सख्त मनाही हो गई। बस, दादी के लिए वो और मैं निरर्थक कबाड़ हो गए, जिन्हें फेंक दिया जाना चाहिए था। उनकी मंशा भांप कर पापा ने अपनी बीमार पत्नी, चार बच्चों और एक वफ़ादार नौकर के साथ गांव की हवेली छोड़ दी और हम सबको लेकर शहर आ गए। मां के गहने बेचकर घर लिया और बच्चों को ट्यूशन पढ़ाकर घर चलाना और अपना शोध कार्य शुरू किया। सबसे पहले वे तीनों बच्चों का एडमिशन शहर के सबसे अच्छे स्कूल में ही कराने गए। प्रधानाध्यापक से बहुत विनती की, पर उन्होंने साफ़ कह दिया कि वो केवल नर्सरी में ही प्रवेश लेते हैं। तब उन्होंने एक दूसरा अच्छा स्कूल देखकर सबका एडमिशन कराया।

पापा के प्रेम और सेवा ने मम्मी को बिल्कुल ठीक कर दिया। छह महीने वो एक नवजात शिशु का पालन-पोषण भी करते रहे। मैं एक पल को भी उनकी गोद से उतरने को तैयार न होती। वे भी मुझे गोद में लिए ही पढ़ने-पढ़ाने के और हर काम करने के आदी हो गए थे। छह महीने उन्होंने माता-पिता दोनों बनकर पाला था मुझे। वे मुझे घंटों बोटल से दूध पिलाते और गर्मी देने के लिए अपने सीने पर लिटाकर जागते रहते। पर मेरी आंखों में आंसू न आने देते।

डॉक्टर की अनुमति मिलते ही मां ने मुझे गोद में लेना चाहा, पर मैंने उनकी गोदी में जाने से इनकार कर दिया।

मम्मी को लगता था कि अब पापा को थोड़ा आराम मिलना चाहिए, पर उन्होंने मुझे पापा से छुड़ाने की जितनी कोशिश की, मैं पापा से उतनी ही लिपटती गई। पापा ने भी मुझे खुद से अलग करने की कोशिश छोड़ दी।

कम से कम मेरा एडमिशन उनके मनपसंद स्कूल में हो जाए, इसलिए सारा समय वे मुझसे अंग्रेज़ी में बात करते रहते। कहकर मां हंस पड़ी थी। और मैं पापा का प्रतिबिंब बनने लगी। जन्मदिन पर कुछ अलग-सी ड्रेस लेनी हो या किसी साथी के घर देखा कोई खिलौना, पापा मेरे एक बार कहने पर

तुरंत उंगली पकड़ा कर चल देते।

दादी व्रत-त्योहारों पर आती रहती थीं। वे मुझे दिन-रात पढ़ते देखतीं, तो कुटिल स्वर में मां से बोलतीं, इसे कुछ कामकाज भी सिखाओ। वही काम आवे है छोरियों के। ज़्यादा पढ़ गई, तो छोरा न मिलेगा। कभी कहतीं कि कौन सा दहेज बच जावेगा पढ़ा-लिखा कर। मैं गुस्साने लगती, तो पापा मुझे इशारे से रोक देते। बाद में कहते, मैं उस दिन का इंतज़ार करूंगा, जब मेरी परियां खुद अपनी योग्यता से अपनी दादी को गलत साबित करेंगी। उस दिन हम दोनों मिलकर दादी को जवाब देंगे।

और मैं उस दिन के इंतज़ार में एक नए जुनून के साथ पढ़ाई में मगन हो जाती। एक बार हरछठ के व्रत में मैंने कौतूहलवश

मम्मी से पूछा, तुम कुछ खा क्यों नहीं रहीं? मम्मी कुछ जवाब देतीं, इससे पहले ही दादी बोल उठीं, तेरे भाइयों की लंबी उम्र के लिए। मेरी लंबी उम्र के लिए नहीं? मैंने मासूमियत से पूछा। नहीं, लड़कियों की जान बहुत सख्त होती है। उनके लिए व्रत नहीं रखने पड़ते। दादी ने रोष से कहा। मेरी आंखों में आंसू छलछला आए। बस पापा ने मुझे गोद में उठा लिया।

परियां भी कहीं रोती हैं? मैं तुम दोनों बहनों के लिए व्रत रखूंगा। और सच में उसके बाद से पापा ने किसी भी हरछठ पर कुछ नहीं खाया। वो मां के साथ व्रत रखते और शाम को हमारे लिए पूजा करते।

इक्कीसवां साल लगते ही दीदी का हाथ पापा के एक सुलझे हुए समृद्ध दोस्त ने अपने डॉक्टर बेटे के लिए मांगा। दीदी का घरेलू स्वभाव और खुशी देखते हुए पापा ने हां कर दी। उसके एक साल बाद भैया लोग इंजीनियरिंग पढ़ने हॉस्टल चले गए और घर में रह गए बस तीन प्राणी। पापा इस छोटे से शहर के प्रतिष्ठित व्यक्ति बन चुके थे। लोग उन्हें अपनी मेहनत के बल पर ट्यूटर से सीढ़ियां चढ़ते-चढ़ते विश्वविद्यालय के अर्थशास्त्र विभाग के विभागाध्यक्ष बननेवाले कर्मठ व्यक्ति के रूप में जानने लगे थे।

हमारा छोटा-सा घर बंगले में तब्दील हो चुका था, पर उनका रहन-सहन और पहनावा अभी भी वही था। गांव से मिले अच्छे संस्कारों को वे भूले नहीं थे।

मैं लगभग सात साल मम्मी-पापा के साथ अकेली रही। मेरी अनपढ़ मम्मी सोलह साल की उम्र में ब्याह कर आईं और उसके बाद दस साल दादी की तानाशाही में रही थीं। वो विनम्र और कर्तव्यपरायण तो थीं, पर पापा की दोस्त नहीं बन पाईं कभी। इसकी कमी मैंने पूरी की। बाकी तीनों भाई-बहन जब तक घर में

रहे, वो पापा के स्वयं को स्थापित करने के संघर्ष की व्यस्तता के दिन थे. शायद इसीलिए मेरा पापा से जो दोस्ती का रिश्ता जुड़ा था, वो किसी और से नहीं जुड़ सका था.

सब भाई-बहन मुझे पापा की लाडली कहकर चिढ़ाते. ठीक भी था, सबकी बुनियादी परवरिश गांव में हुई थी, तो वे सुसंस्कारी और आज्ञाकारी थे. और मुझे पापा की उन्मुक्त परवरिश मिली थी, जिसने मुझे बेबाक, बिंदास और ज़िंदी बना दिया था. मैं उनसे तर्क कर लेती थी, ज़िद कर लेती थी, लड़ लेती थी, ज़रूरत पड़ने पर उन्हें डांट भी लेती थी. एक मैं ही थी, जो पापा के साथ चुहल करती थी.

स्कूल के अंतिम वर्ष में ही मैंने तय कर लिया था कि मुझे गणित की व्याख्याता बनना है. उस छोटे से शहर में विश्वविद्यालय की पढ़ाई तो बहुत अच्छी थी, पर माहौल अच्छा नहीं था. घर से कॉलेज तक के रास्ते में आवारा लड़कों के कारण लड़कियों का चलना मुश्किल था और कॉलेज के अंदर उनके कारण पढ़ना. फिर गणित की कक्षा में तो तीन ही लड़कियां थीं.

तब मेरा सामना हुआ उस कड़वी सच्चाई से, जिसने मुझे भीतर तक तोड़ दिया. ईव टीज़िंग लड़कियों के खिलाफ होनेवाले भयानक हादसों के मुकाबले ये बहुत छोटा लगता है, पर जिसने झेला है, वही इसका दर्द जानता है.

गणित की कक्षा में उस नाकारा लड़के के अहं को क्लास की सबसे होनहार लड़की से आहत हो जाने में समय नहीं लगा. उसके कारण मेरा जीना दूभर हो गया. पहले शादी का प्रस्ताव, न मानने पर कभी बलात्कार, तो कभी एसिड अटैक की धमकी.

संयोग से उन्हीं दिनों शहर में कुछ ऐसी भयानक घटनाएं घट गईं कि हर लड़की के पिता की तरह पापा भी डर गए. उस पर मेरे केस में पुलिस का कहना था, जब तक कुछ हुआ नहीं, तब तक गिरफ्तारी संभव नहीं.

समाज का, उस लड़के के घरवालों का, विश्वविद्यालय का गैरज़िम्मेदाराना और लड़की को ही गलत साबित करने का रवैया. दादी का वो नशतर आज तक दिल में गड़ा है, खुद को चाहे जितना बदल लो, समाज को थोड़े ही बदल सकते हो. लड़की वो पराई दौलत है, जिसकी रखवाली में ही बाप बूढ़ा हो जाता है.

विश्वविद्यालय के पांच साल कैसे बीते, ये या तो मेरा दिल जानता है या पापा का. पापा ने मेरे लिए हर लड़ाई लड़ी, पर मुझे घर से बाहर के काम सिखाने और अकेले बाहर निकलने का आत्मविश्वास देने के लिए काम सौंपने की हिम्मत वो न कर सके.

उन्होंने मुझे हर चीज़ सिखाई सिवाय अकेले कहीं आने जाने के. शहर की आवारा सड़कों पर, ट्रेन में, बस में मुझे अकेला छोड़ने की हिम्मत वो कभी नहीं कर सके. अंतर्विद्यालयी प्रतियोगिता हो या किसी सहेली की शादी, वो खुद छोड़ने और लेने जाते. पर मेरी हिम्मत उन्होंने कभी टूटने नहीं दी. मैंने पढ़ाई में दिन-रात एक कर दिया और पापा ने मेरी रखवाली करने और नैतिक संबल बनने में. आखिर हमारी मेहनत रंग लाई और मैंने पूरे प्रदेश में टॉप किया.

तुरंत ही मेरी एक दूसरे शहर में लेक्चरर की जॉब लग गई. तभी किसी रिश्तेदार ने उसी शहर से उसी विश्वविद्यालय में भौतिक विज्ञान के प्रोफेसर का रिश्ता बताया, जो पापा को बहुत पसंद आया. दोनों के घर के बड़ों ने बड़े शौक से चट मंगनी और पट ब्याह रचाया. पापा ने विदाई के समय मुझसे कहा, जो कुछ मैं तुम्हें नहीं सिखा सका, वो अब सीखना, पर सीखना ज़रूर. बिना बाहर निकलने के, बाहरी कामों के ज्ञान और आत्मविश्वास के आर्थिक आत्मनिर्भरता अधूरी है.

लेकिन कुछ घर और नौकरी की व्यस्तता और कुछ पति का अधिक ही प्यार और देखभाल का स्वभाव, मैं पापा से किए वादे को भूल गई. कई बार उनके याद दिलाने पर कोशिश की, तो पापा कि दहशत के उन पांच सालों में मुझे अकेले बाहर निकलने का फोबिया डेवलप हो चुका है. ये तो बिल्कुल मनोरोग की तरह है. अकेले बाहर निकलने की सोचकर ही मेरे हाथ-पांव कांपते देख एक बार पति को भी लगा. पर जैसा कि अपने देश में होता है, न उन्होंने न ही मैंने किसी तरह के इलाज की ज़रूरत समझी. हमारे खुशहाल और एक-दूसरे का अधिक ही ध्यान रखनेवाले संयुक्त परिवार के कारण ज़रूरत भी नहीं महसूस हुई कभी.

पापा अक्सर समझाते, चुहल करके चिढ़ाकर भी अकेले मायके आने के लिए मोटिवेट करते. एक बार तो बोले, तुझसे तो भली तेरी दीदी है, जो अकेले अपनी सारी खुशियां पूरी करने की शॉपिंग करती है और दूसरे शहर से ट्रेन से और कभी कैब करके भी मुझसे मिलने आ जाती है. हर महीने मिल कर जाती है वो और एक तू है जो महीनों लगा देती है अपने पापा से मिलने आने में. क्योंकि तू दूसरों पर निर्भर है.

वो जानते थे कि ये तुलना मेरे मर्म पर चोट करेगी और मैं आ जाऊंगी. ऐसा हुआ भी, पर फिर निकलनेवाले दिन मुझे चक्कर आने लगे. फ्लाइट बुकिंग कैंसिल करानी पड़ी. चेकअप हुआ, तो पता चला मैं प्रेगेंट थी. मेरी दूसरी प्रेगेंसी का चौथा महीना था और

देवरानी की पहली प्रेग्रेसी का पहला. मुझे और मेरे पति को दो साल के लिए विदेश जाने का मौका मिला. ये एक प्रकार का शोध था. पति को तुरंत जाना था, पर मैं एक साल बाद तक का कोई भी समय चुन सकती थी. डॉक्टर ने मुझे इतने लंबे सफ़र की अनुमति नहीं दी. तो तय हुआ कि वे डिलीवरी के बाद जैसे ही मैं सफ़र करने लायक हो जाऊंगी, मुझे लेने आएंगे. लेकिन मेरा शोध देर से शुरू होने से मुझे देर तक वहां रुकना भी होगा. इस बीच उन्हें छुट्टी लेकर वहां रुकना होगा. अतिरिक्त दिनों के वीजा में भी इंडाट आएगी. अगर मुझे लेने आने के लिए छुट्टी या आगे रहने के लिए वीजा मैनेज नहीं हुआ, तो? मैं ये शोध छोड़ने की सोचने लगी. इतना तो तय था कि अकेले वहां जाना और इनके लौटने के बाद अकेले रहना, तो संभव नहीं ही है.

ये प्रॉब्लम पापा के कान में पड़ी, तो बहुत गुस्साए. कहने लगे, ये शोध है और इसमें चुना जाना तुम लोगों की मेहनत और प्रतिभा का फल है. कितनी प्रोन्नतियां जुड़ी हैं इसके साथ. ऐसे में अकेले जाने और रहने की बचकानी चिंताओं में इस स्वर्णिम अवसर को गंवाना कतई ठीक नहीं है. तभी पापा के एक्सीडेंट की खबर मिली. देवर का देवरानी के साथ रहना ज़रूरी था, पर इस बार कोई फोबिया मुझे अकेले उनसे मिलने जाने से रोक नहीं सकता था, पर डॉक्टर की सख्त मनाही के आगे सब लाचार थे.

डेस्टिनेशन पर पहुंचने के एनाउंसमेंट की आवाज़ से मैं वर्तमान में वापस आई. इतनी सहजता से दो छोटे बच्चों और सामान को लेकर मैं एयरपोर्ट से कैब लेकर घर पहुंची कि मुझे खुद पर ही आश्चर्य हो आया. घर पहुंचते ही पापा से लिपट गई. मम्मी, भैया-भाभियां बच्चों को संभालकर चाय-नाश्ते के लिए पूछते ही रहे, पर मैं तो पापा से लड़ने में इतनी व्यस्त थी कि किसी की बात सुनने को तैयार ही न थी. आखिर पापा हाथ जोड़कर अपने पुराने अंदाज़ में मुस्कुराए, अच्छा मेरी मां, तू जीती मैं हारा. तू बस हाथ-मुंह धोकर कुछ खा ले और बच्चे को फीड करा दे. और हां ये जो फिजियोथेरेपिस्ट आता है न, बड़ा नालायक है. तू ऐसा कर कि यहां के सभी

मैं सब समझ गई पापा, मैं सब कर दूंगी, फिर तो आप मेरी बात मानेगे न? बिल्कुल, अब से जैसा तू कहेगी, वैसा ही करूंगा. मैंने जीत की खुशी में पापा को ताली दी और उठ खड़ी हुई. भतीजी की स्कूटी उठाई और नेट से सर्व किए शहर के फिजियोथेरेपिस्ट्स से मिलने निकल पड़ी. मुझे पता था कि उनसे

बात करके उनका सेटअप देखकर पर्सनली मिलकर मुझे उनकी प्रतिभा, क्षमता और संवेदनशीलता को समझना है.

इस काम में मैं एक्सपर्ट थी. शहर के लगभग सभी थेरेपिस्ट से मिलने के बाद जो मुझे सबसे अच्छा लगा, वो घर जाकर काम नहीं करता था. उसका अपना वेल सेटिल्ड क्लीनिक था. सभी मशीनें आधुनिक और बहुत अच्छी हालत में थीं. मैंने तय कर लिया एक महीने पापा को एंबुलेंस से यहां ले आऊंगी. थेरेपी, रिलायबल एंबुलेंस आदि सब सेटल और बुक करके मैं बेटे को फीड कराने के अगले टाइम यानी तीन घंटे से पहले लौट भी आई.

एंबुलेंस क्यों? अपनी कार में जाऊंगा. पापा ने नाक-भौं सिकोड़ी ठीक है, मैं कल से भैया की बात बीच में काटकर पापा गुस्साए, अब छुट्टियां बची भी हैं तेरे पास? ये क्यों नहीं ले जा सकती? ड्राइविंग लाइसेंस तो लाई है न? कहते हुए वे मेरी ओर मुखातिब हुए. हां पापा, लाई तो हूं मेरी आगे कोई बहस करने की हिम्मत न हुई.

इतनी स्ट्रॉन्ग विल पॉवर के इनसान को ठीक होने में दो हफ़्ते से ज़्यादा नहीं लगेगा. पहले ही दिन थेरेपिस्ट बोला, तो मैं खुशी से उछल पड़ी. घर आकर अपनी उपलब्धि पर पापा को जीत की ताली दी, तो वे बोल उठे, अब तो तुझे यकीन हो गया न कि तू अकेले विदेश जा सकती है और दामादजी के लौट आने पर भी अपना शोध पूरा होने तक बच्चों के साथ अकेले वहां रह सकती है. किसी दिक्कत के आने पर अकेले मैनेज कर सकती है? मुझे झटका सा लगा.

अब इस मुलाकात में पहली बार मैंने पापा का चेहरा ध्यान से देखा. वही ममता और आत्मविश्वास से भरी मुस्कान, स्नेह से दमकता, सरल चेहरा. कहीं आत्मबल की कमी, मन के टूट जाने या इच्छाशक्ति के खत्म हो जाने के कोई संकेत नहीं. तो क्या मेरा फोबिया खत्म करने के लिए पापा इतने महीनों से बिस्तर पर थे? तो क्या मेरी अधूरी शिक्षा पूरी करने के लिए मेरे सामने ये परीक्षा रची थी? मुझे दादी से जिताने के लिए उन्होंने ज़िंदगी से हार जाने का नाटक रच डाला था डॉक्टर कहते थे कि अगर हड्डी जुड़ने के कुछ माह बाद तक ये थेरेपी पूरी न हुई, तो हो सकता है पापा को ताउम्र झुककर चलना पड़े. पापा के चेहरे पर साफ़ लिखा था कि उनकी ममता को मुझे तनकर चलना सिखाने के लिए खुद सारी उम्र झुककर चलना पड़ने का जोखिम उठाने का कोई अफ़सोस नहीं था.

